दीवानी विनोद

दो ब्यानों का हाल
कुमाऊनी कविता में

लेखक :
स्व० ठा० दीवान सिंह स्योंत्री विष्ट

अवैतनिक सम्पादक :—नरसिंह हीत बिष्ट

सहायक सम्पादक सशोधक :
चिन्तामणि पालीवाल

सर्वाधिकार नरसिंह हीत विष्ट जी के आधीन

प्रकाशन विभाग :
कुमाऊनी साहित्य मण्डल
बाजार सीताराम चौरासी घन्टा, दिल्ली-६

तुर्थ म

१९७५ तृतीय संशोधित संस्करण

10.00

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक 'दीवानी विनोद' का तृतीय संस्करण बड़ी सावधानी से सशोधित करके प्रकाशित किया जा रहा है। इससे पहले के प्रथम व द्वितीय सस्करण में कुछ चीजें दीवान सिह की लिखी हुई रह गई थी जैसे कई पद गीत तथा उनकी जीवनी व श्रद्धांजली आदि इस संस्करण में जो भी गीत व सम्वाद जैसे मर्द का घरवाली को समझाना व घरवाली की मुंहजोरी करके उत्तर देना। मर्द का भाई बिरादरों को बुलाना और दूसरी शादी के लिए आग्रह करना व भाई बिरादरों का उत्तर देना और अपने आप अकेले कन्या खोजने को जाना और लड़की के बाप का कुशल बात पूछना व कन्यार्थी की बात चीत तय करके सभी शर्तों को मंजूर करके बारात को ले जाना आदि सभी सम्वादों का आशय हिन्दी गद्य में दिया गया है। इनकी कवि की कलाकृति बड़ी मार्मिक है।

उपरोक्त पुस्तक आज से ६० साल पहले की लिखी हुई है जब कि पर्वतीय लोग १०% पढ़ लिखे और स्त्रियाँ ५% साक्षर थीं। बड़े-बड़े घरानों की लड़कियां अनपढ़ ही थे। उस जमाने के चौधरी सयाणे थोकदार लोग भी अनपढ़ से ही थे। जो बड़े घराने के लोग कहलाते थे उस जमाने के लोग सर्दियों में तराई भाबर में जाकर काम करते थे और चैत में पहाड़ों में आया करते थे। प्रस्तुत पुस्तक में उस जमाने का वातावरण व रीति रिवाज लिखे हुए हैं। इस प्रकार यह पुस्तक इस जमाने की रसिकता को लिए हुए है। वह रस अब भी नया ही प्रतीत होता है इसीलिए इसकी अब भी बड़ी माँग है पुराने-पुराने लोग अब भी इसको ज्यादा मांगते हैं. जिन्होंने इन गीतो कविताओं को स्व० दीवान सिह जी से सुना है। त्रुटियों के लिए क्षमा प्रार्थी —

[प्रकाशक

ठा० दीवानसिंह जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

स्व० ठा० दीवानसिंह जी स्योंत्री बिष्ट ग्राम कुन्हील पल्ला नया जि० अल्मोड़ा के रहने वाले थे। इनका जन्म सन १८८७ या ८८ के लगभग समझा जाता है क्योंकि उनका निधन सन १९५२ में हुआ था उस समय यह लगभग ६५ वर्ष के थे। उन्होंने वैसे तो और भी कई चीजें लिखी लेकिन यह रचना उनकी प्रख्यात हो चुकी थी। उन्होंने इनको ताल सुर लय के साँथ हारमोनियम बाजे में गाकर सुनाया था।

ठा० दीवान सिंह जी अपने समय में एक प्रसिद्ध गायक तथा संगीतकार थे और रामलीलाओं के संचालक (डारेक्टर) थे। रामायण का उन्हें पूर्ण ज्ञान था और रामायण से बड़ा प्रेम था। बाजा तबला भी खुद ही बजाया करते थे। वह पाली पछाऊ भर में रामलीला के पहले ही आयोजक थे। सबसे पहले सन १९२० के लगभग उन्होंने ग्राम कमराड़ वला नया अल्मोड़ा में रामलीला की उसके बाद वह प्रसिद्ध डारेक्टर हो गए कमराड़ में भी कई बार रामलीला की और पाली पछाऊ में कई जगह नए लड़कों को शिक्षा देकर रामलीला की। वह अधिकतर लंकाधीश रावण का पार्ट अदा करते थे। रावण की पोशाक उनकी अपनी थी जो कि मरणान्त तक अलग रखी हुई थी।

रामलीला खेलते खेलते उनका ध्यान अपनी मातृ-भाषा कुमाऊनी पर गया। तब उन्होंने कई कुमाऊनी गीत पद लिखे। उसके बाद उन्होंने यह दो शादियों का हाल लिखा इसका नाम उन्होंने 'दीवानी विनोद' रखा। यह नाम भी इसीलिए रक्खा कि उन्होंने गोस्वामी तुलसीदास की रामायण की तरह अपने ही मनाविनोद के लिए लिखा है। जैसे गास्वामी जी ने कहा है कि :—

स्वान्त सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा।
भाषा निबन्ध मति मंजुल मातनोती ॥

इसी प्रकार दीवान सिंह जी ने भी यह लिख कर कई लोगों को बांट दी पर छपाई नहीं। अन्त में जब कई लोगों ने आग्रह किया कि यह छपना चाहिए तब उन्होंने छपने की स्वीकृती दी। उस समय सबसे पहले चिन्तामणि पालीवाल ने उनसे कहा आप मुझे छापने के लिए दीजिए मैं आपकी कृति को प्रकाशित करूंगा। उन्होंने पालीवाल जी को दे दी। जब कई दिन हो गए उनसे नहीं छपाई गई तो कमल सिंह बसनाल जी ने कहा आप मुझे दिलाओ मैं छपाऊंगा उन्होंने बसनाल जी को दिला दी उनसे भी कई दिन तक नहीं छप सकी तो नरसिंह हीत बिष्ट जी ने आग्रह किया तो उनको भी दिला दी। जब हीत बिष्ट जी से भी न छप सकी तो इस प्रकार लगभग एक साल का समय गुजर गया तब उन्होंने एक पत्र लिखा जो कि बड़ा रोमांचिक था।

दीवान सिंह जी का पत्र

सिद्ध श्री सर्वोपमा योग्य सकल गुणा विधान। विजमान श्रीमान चिन्तामणि पालीबाल, कमल सिंह बसनाल बिष्ट, व नरसिंह हीत बिष्ट जी, अत्र कुशलम् च तत्रास्तु। यथा योग्य सेवा। तुमने बड़े हौसले से किताब छपवाने को मंगाई थी। एक शेर कमराड़ से गर्जा एक बेल्टी से गर्जा था और एक शेर कुंमरा से गर्जा था तुम सब के सब स्यार निकले। तुम दिल्ली के चिड़ी मारों से किताब नहीं छपती बिना नीर के नदी नहीं और बिना ज्ञान के जोगी नहीं होता तथा बिना नीति के राजा नहीं होता और बिना ज्ञान के पण्डित नहीं होता। कहीं हींग में भी कस्तूरी की खुशबू आ सकती है? ओ किताब वापिस भेजो मुझे किताब वहीं छपवानी।

इस प्रकार का उनका पत्र आने पर उन्हें सन्तोषजनक उत्तर देकर जब किताब छपने की योजना शुरू हुई थी तो उसी बीच में उनका देहावसान हो गया।

योग्यता व परिस्थतियां तथा श्रद्धांजली

श्री दीवानसिंह जी बड़े ज्ञानी जन थे। जहां उनको गीता व रामायण का गहरा ज्ञान था वहाँ लोक गीतों के भी रसिक थे तुकबन्दी में जोड़ा-जोड़ करना उनके लिए साधारण काम थे लेकिन बाजे तबले में भी लोक गीतों को गाया करते थे। पूजा पाठ में भी निपुण थे। इनकी दो शादियाँ भी थीं पर किताब इन्होंने बाल्मीकी रामायण की तरह दूसरी शादी होने से पहले ही लिख दी थी। बाद में दूसरी शादी होने पर जो लिखा और गाया था सो-सत्य प्रतीत हुआ। वैसे यह सम्पन्न घर के थे। एक समय उनका बड़ा अच्छा कारोबार था। दो औरतों के पास नथ, सुत, धागुल, मुन्हड़ा सब जेवर अपने भी कानों में सोने के (मुन्हड़े) कुण्डल (मुरकियाँ) और हाथों में (धागुल) कड़े थे। भावरी बैल लेंणी भैंस थी। लड़का भी अच्छा सयाणा हो गया था लेकिन एक समय ऐसा आया कि (सब दिन होत न एक समाना) इन्हीं के नजरों के सामने सब समाप्त हो गया, लड़का भी दोनों औरतें भी। बाद में ये अकेले ही रह गए। महाकवि रहीम की सी दशा हो गई। अन्त में यह अपनी अन्तिम दाह क्रिया और पिपलपानी तक का विधान अपने हाथ से बना गए। वह वृतान्त आगे पद्य में दिया गया है। ऐसे युग पुरुष को हम कुमाऊनी साहित्य मण्डल के सभी सदस्य अपनी भाव भरी श्रद्धाँजली अर्पित करते हैं।

अवैतनिक सम्पादक :—
नरसिंह हीत बिष्ट
ग्राम डुंगरा पट्टी पल्ला नया
जिला अल्मोड़ा (उ० प्र०)

नारी क्या है

नारी के विषय में हमारे पूर्व विद्वानों ने बहुत कुछ कहा है। यह भी कहा है कि नारी की महिमा का वर्णन नहीं हो सकता। गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी कहा है कि :—

विधिहु न नारि हृदय गति जानी।
कोटि कुटिल अंघ अवगुण खानी॥

फिर वहीं पर कहा है :—

कहा न अबला प्रबल कर। कहा न सिन्धु समाय॥
कहा न पावक में जरे। काल कहे नहिं खाय॥
यद्यपि नीति निपुण नरनाहू।
नारि चरित गाविधि अवगाहू।

हमारे शास्त्रकारों ने कहा है :—

यत्र नार्यास्तेय पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।

और विद्वानों ने कहा है कि :—

नारी नारी ना कहिये नारी है नर को खान।
नारी से ही नर पैदा भये, ध्रुव प्रहलाद समान॥
जन्म कारण जननी भई, प्यार कारण बालिका।
भोग कारण पत्नी भई, अन्त कारणा कालिका॥

इसके उत्तर में दूसरे लोगों ने कहा है :—

नारी नारी क्या कहै नारी नरक की खान।
मन लेवै मुस्काय के तन ले सीना तान॥
मोह जाल में फांस के, ले वै तन मन प्रान।
बड़े बड़ों का खो दिया, बुद्धि विवेक विज्ञान।

इसी प्रकार ठा० दीवान सिंह ने भी कहा है :—

दोहाः—कुलटाओं के चरित्र को, सबहि कहुँ समझाय।
मछली रूपी मर्द को, पकड़े जाल बिछाय॥

गानाः—औरत को ईश्वर ने बनाया, जग बढ़ाने के लिये।
शूर से अरु कूर तक, बस में इनके आ गये॥
मोह रूपी यंत्र इनके, जग डुबाने के लिये।
युवतियों का धर्म था, जो हरेक युवती के लिये॥
औरतें तैयार खड़ी हैं, सत्त उड़ाने के लिये।
हाथ में तलवार इनके है, जग कटाने के लिये॥

दोहाः—औरत बनी दुःचारिणी, सीमा तक पहुँचाय।
अपने पास बुलाय के पति रहे समझाय॥

एक सन्देश

दिवान सिंहैं चिट्ठी जब चुभि गे मनम।
सबु पैली छपौ तब बावन सनम॥
उम्मेदसिंह मनुराल रूपवाणी प्रेस।
देहली दरिया गंज करि गोय पेस॥
नर सिंह हीत विष्ट हया प्रकाशक।
आफी संशोधक हया आफी प्रकाशक॥
छपि गे किताब तब सब खुशि हया।
लेकिन दीवान सिंह स्वरग न्है गया॥
दुसरौ संस्करण छपौ साहित्य मण्डला।
तिरशट सनम छपौ बनाया बण्डला॥
तब कौ छपीया जब खतम है रौय।
जनता की मांग पर फिर छपि गोय॥

(पति पत्नी से)

जब औरत मनमानी करने लगती है और पति के विपरीत चलने लगती है तो पति अपनी पत्नि को समझाता है कि देख हम इज्जतदार आदमी हैं। हमारे घर पर चार भले आदमी जब आते हैं तो उनके सामने तू इज्जत से नहीं बोलती है भले आदमियों के सामने अदब से रहना चाहिए, ज्यादा कुछ बोलना नही चाहिये। अब मैं तुझे अकेले में समझा रहा हूं। तू रोज नये नित्य शृंगार करती है। कहीं मेले या तमासे में जाती है तो चौथे पाँचवे दिन घर आती है यह औरतों के लिए उचित नहीं है। यदि मैं कुछ कहता हूँ तो तू ऐसा बोलती है मानो काटने को दौड़ती है।

मैंने लाख तुझे समझाया पर तेरी समझ में नहीं आता है। देख परसों जो पं० जी हमारे यहां आये थे उन्होंने नारी धर्म के विषय में जो कुछ कहा था उस पर ध्यान दे। उन्होंने कहा कि स्त्री पुरुष की अर्धांगिनी होती है। आधा अंग स्त्री अंग पुरुष होता है तब पूरा अंग बन कर सुख प्राप्त होता है। उन्होंने कहा था हमारे भारतवर्ष में एक से एक उच्च कोटि की नारियां पैदा हुई हैं जैसे :— माता सती सीता सावित्री, पार्वती सती सुलोचना, द्रोपदी, दमयन्ती जिनके नाम अब तक अमर हैं और जब तक धरती और आकाश रहेगा और सूर्य तथा चाँद गंगा जमना रहेंगी तब तक अमर रहेगा।

पति पत्नी से कहता है कि देख हमारा सम्पन्न घर है चार भाई बिरादर हमारी इज्जत करते हैं। अन-धन, जर-जेवर कपड़े ओढ़ना-बिछौना की कमी नहीं। इच्छा मुताबिक खावो पहनो लेकिन समय पर काम को जाना समय पर घर आना, मीठा मधुर बोलना चाहिए। जब तू झुंझलाकर तुच्छ बचन बोलने लगती है तो मर्द का स्वभाव है मुझे गुस्सा आ जाता है और मेरा हाथ चलने लगता है ऐसा नहीं

मर्द औरत से

सुण मेरी बातों कणि, मेरी घर वाली।
भ्यारा का भलें लै भाणी कब तक खाली॥
नना टुला मेंस सबा, म्यरा घरा आनी।
उनरा बीचमा म्यरौ, मुल्याजा निखानी॥
म्यसौ मांङ्गौ छोड़ि हैछा, द्वि बरसा बटी।
रोजै तू कपड़ा ध्वोछै, रोजै कैछै लटी॥
कौतिक लै जैछै जबा, पछां दिना ऐछै।
जरा लै बुलाय मैंलै, बुकैं जसौ खेंछै।
कतु समजैछै मैंलै, ते नि आनौ ज्ञाना।
पोरु जो पण्डित कोंछी उमें धरा ध्याना॥
आधु अंग मरदौ कौं, आधु हैंछा नारी।
जबा हौचा पूरौ अंग, तब सुख भारी॥
महारानी दमयन्ती, सुलोचना छिया।
उनुलै दुनिया मजी, नाम धरी दिया॥
मनक कपड़ पैरी, खैंचै दाल भात।
दोपहरी बणां जैंछैं, ऐंछै आधी रात॥
मैंकड़ी जै गुस्सा आलौ, चली जालौ हात।
गुस्सै की भरिया हैंचा, मरदै की जात॥

औरत मर्द से

पति जब शाम दाम दण्ड भेद की नीति से औरत को समझाता है तो औरत और गुस्से में आकर क्या जोश में कहती है कि

किस प्रकार मुझे कुत्ते की तरह धमका रहा है। मैं अच्छी खानदान की लड़की हूँ तब चुप रहती हूँ। जब कोई ज्यादा बोलता है तो बोलना ही पड़ता है कोई कमजात औरत होती तो अब तक चली जाती। इस प्रकार धमकाने से मैं तेरे बस में नहीं आ सकती हूँ। ज्ञान ध्यान मुझे क्या बताएगा मैं सब जानती हूँ। बोलने चालने में तू मुझ पर दोष लगाता है मैं तुझे क्या समझूं?

जो मेरे मन में आएगी मैं वही करूंगी तेरे धमकाने से नहीं डरूंगी मुझे तिल भर भी किसी का डर नहीं है जो तेरे मन में आए सो तू कर ले।

पद्य

कस धम काख मैछै, कुकुरै की चारा।
जैसी कैसी सैखी हनी, लागी जानी धारा ।।
हेसिका निआनु अबा, मैं त्यरा बसमा।
हिटखौ कौ साखौं लांछै, तू क्यकौ खसमा ।।
ज्ञान ध्यान क्य सुणालै, मैं जाणनू सबा।
त्यर गुसै देखि लिया, चुपै रौय तबा ।।
शरमें की चेली छौं मैं, तब चुपै रौय।
जबा जैलै बुलै मांगो, चुपाश्रों क्य हय ।।
जसी म्यरा मना आली, मैं वसै करूला।
त्यरा धमकंणा देखी, किलैकी डरूला ।।
म्यकणि निहाती कैकी, तिला भरी डरा।
तेकणि वै रिखा चकी, जे करछै करा ।।

मर्द अपने भाई बिरादरों से

औरत की इस प्रकार की बातें सुनकर मर्द गुस्से में आकर भाई बिरादरों से कहता है : देखो जी कका, ददा. बड़ बौज्यू, दाज्यू देखो यह किस प्रकार बदतमीजी से बोल रही है यह मर भी नहीं सकती आफत हो गई है।

अब मेरी फिकर सुनो कहीं मेरे दूसरे ब्याह का बन्दोबस्त करो। कही अच्छी लड़की मिल जाए तो चाहे जितने रुपये लग जायें। दो दिन की जिन्दगी है इस प्रकार दुख में कैसे जिन्दगी व्यतीत करूं ? इस औरत के बारे में किस-किस बैर बांधू जिन्दगी रही तो ब्याह जरूर करूंगा मर गया तो खैर। सारे गांव के भले आदमी मेरा क्या बिगाड़ रहे थे। इस छोटी जात की औरत ने मुझे कैसा दुख दे दिया है मुझको अब ब्याह जरूर करना पड़ेगा।

पद्य

कका ददा सुणौ भागी, य राना का हाला।
मरी नि सकनी राना, हरै गोछा काला॥
कका ददा सुणौ तुम, य मेरी फिकरा।
कथैं बटि करौ म्यरौ, सैणी की जिगरा॥
भली बाना मिलि जानी, जतु रुपैं खना।
द्वि दिना बचणों छिया, फिर जै क्य अना॥
ह्याका लिमतरा कौनूं, कै कै सांथा बैरा।
बची जौला ब्या करूला, मरी गोंय खैरा॥
सारै गोंका भल मैंसा, म्यरौ क्य निछिया।
छोटि जात तिरियै लै, कसौ दुख दिया॥

भाई बिरादरों का समझाना

भाई बिरादर कका ददा कहते हैं भाई दूसरी शादी का नाम मत लो। दो ब्याह वालों के हाल खराब हो जाते हैं। दुनिया में उनकी इज्जत नही रहती। कई लोगों ने दूसरी शादी की उन सबके हाल खराब हुए इसलिए तू दूसरी शादी मत कर।

दो०-दोव्या-दोव्या मत कहिये दो व्याह दुख की खान।
दो व्याह से ही हो गए, नृप दशरथ हैरान॥

तेरा तो बड़ा अच्छा कारोबार हो रहा है। दुशमन के यहां भी दो औरतें न हों। दुःख सुख तो अपनी तकदीर का है। किसी को जब ईश्वर ने कर्मों के अनुसार दुःख ही देना है तो सुख कैसे मिल सकता है। बड़े-बड़े घरानों में भी ऐसी औरत होती है क्या किया जाय भाग्य साथ ही रहता है चाहे दूसरी शादी करो या तीसरी।

दोहा-चार चतुर मृग चार खग चार फूल फल चार।
भ्राता पूर्व पुन्य बिन, मिलै न सुन्दर नार॥

भाई अगर हमारा बिरादर है तो हमारी बात मान दूसरी शादी का नाम मत ले दूरसरी शादी करेगा तो हैरान हो जायेगा तेरे सिर में उल्लू बैठ गया है। तेरी बुद्धि भ्रष्ट होकर नदी में बह गई है। दूसरी शादी करेगा तो फिर तू रोयेगा। जिस बखत दोनों औरतें लड़ेंगी तो तेरी (चूव) चोटी पकड़कर खेंचेंगीं तब तुझको हमारी बात याद आएगी। फिर तू कहेगा में मर जाता ता अच्छा होता। ठा० दीवान सिह जी ने ये सब आखों देखे हाल लिखे हैं।

पद्य

सुणी ले तू बातू कणि, दि व्याऊ का हाला।
दिया व्याऊ जैंका हैंला, वका हया काला॥

दिया ब्याऊ वैक हैंला बिगड़िया दाना ।
निरोंनौ भरमा वैकौ, निर हौनों माना ।।
कतूकूलै ब्याऊ कग, कुटम जंजाला ।
द्वि ब्याऊ का नश वाला है गई बेहाला ।।
त्यरौता है रौछा भागी, भलौ कारोबारा ।
शतुरोंका घर हैजो, द्वि सैरएयों को मारा ।।
जैकणि ईश्वर दिला, कग्मौ कौ दुख ।
तैकणी किलैका मिलौ, तिरियकौ सुख ।।
निदेखनी खानादाना, पति की इज्जता ।
ठुला घरा बिगै दीछा, सतियों कौ सता ।।
छैं हमरौ बिरादरा, हामरौ कैं माना ।।
दूसरौ जै ब्या करलै, पै हलै हैराना ।।
मुनौवा मा उल्लू बासौ, मती न्हैगे गाड़ा ।
दूसरौ ब्या करलै ता, पै मारलै डाड़ा ।।
द्वियै सैणी बौई जैंला, पगड़िला चुवा ।
क्यलैका फुकछै भागी पलका ढेपुवा ।।
पैजै कलै कथां जानूं, हरै गोछा काला ।
दिवान सिंहा सुणि लियो, द्वी ब्यानों हाला ।।

मर्द अपने बिरादरों से

कहता है :—(कका) चाचा जी जो आप कह रहे हो वह है तो ठीक इस बात को मैं भी समझता हूं पर इस औरत ने मेरे दिल में दरार कर दिए हैं जो गुण औरतों में होते हैं वह गुण इसमें एक भी नहीं हैं जब दूसरी शादी करूंगा तब यह रास्ते पर आएगी ।

कल सवेरे तुम में से एक आदमी मेरे साथ चलो और मेरी शादी की चर्चा चलाओ। ऐसे अवसर पर ही भाई बिरादरों की पहचान है।

दोहा-तुलसी तीन प्रकार से, हित अनहित पहचान।
पर बस पड़े पड़ौस बस, पड़े मामला आन॥

*

मैं देखी छनी छिया, हिंतेंनी फरका।
हेकी बाता सुणी मेरी छाती में दरका॥
सौ गुणा सैणी मां हौनी, एमें निछा एक।
दुसरौ ब्या करुला ता, उतरली सेका॥
मोवा राती परा हिटौ, तुमु एक भणा।
स्वरा बिरादरों की छा, दुखै में पछ्याणा॥

बिरादरों का उत्तर

भाई बिरादर कहते हैं भाई हम तो तेरे साथ बान खोजने को नहां नहीं आते क्योंकि तेरी औरत वैसे ही रास्ते चलते में गाली देती है। हम तो अपने पाले पोसे हुए बच्चों को नहीं कटाते। हां तेरी औरत शरीफ और सीधी होती तो हम क्यों नहीं आते कहीं न कहीं से तेरी शादी का बन्दोबस्त कर देते।

दुनिया में हमने आज तक ऐसी औरत नही देखी।

*

कका ददा मब कौनी, हम ता निआना।
सैंतिया पाईया हम, नना नि कटाना॥
बटा हिटणम दिछा, तेरी सैणी गाई।
दुनियां में कवे निदेखो, हेसी अरघ्याई॥

तेरी सैणी भली हेंनी, क्यलकि निआना।
दशा जगा फेरी बटो, बाना खोजी ल्याना॥

*

दूसरा ब्याह खोजने को अकेले जाना

जब भाई बिरादर चाचा दादा कोई नहीं आता है तो मिजाई और पाजामा पहन इहकरी टोपी ओढ़ और कन्धे में दुपट्टे डाल हाथ में लाठी लेकर अकेले ही बान खोजने को चल दिया। जाते-जाते कई गांवों में जा पहुंचा। एक गांव में किसी के घर पर बैठ गया। घर वालों ने पूछा आपने कहाँ जाना है अब रात हो गई है। तब वह कहता है मैं कन्यार्थी हूं। मैंने कल से कई गाँव देख लिये हैं। क्या इस गाँव में किसी की लड़की ब्याहने योग्य है तो बताओ। घर वाले कहते हैं आप कहाँ के रहने वाले हैं? आपका क्या नाम है क्या कारोबार है? लड़कियाँ तो कई हैं एक लड़की हमारी ही हैं और एक हमारे चाचा जी की है। एक (तलबाखई) नीचे वाले मौहल्ले में भागीरथ कीं है। तुम कैसी शादी करते हो? तुम्हारे घर में शादी है या नहीं? तब वह कहता है झूठ तो मैं कैसे कहूँ घर में मेरी शादी तो है पर कुछ भी काम की नहीं है। तब लड़की वाले कहते हैं हम अपनी लड़की को सौत में नहीं देते! जिसके घर पर जाता है वहीं ऐसा कहते हैं। हम अपनी लड़की का (अकलाकंठ) बद्दुआयें नहीं लेते। इस प्रकार दस बारह दिन हो गये हैं कई गांव दूढ़ लिये हैं कोई लड़की नहीं मिली।

अकेले जाना

कनमा पिछोड़ी धरी, हाता पारा लट्ठा।
दघड़िया क्वे निमिलौ आफी लागौ बट्टा॥
जैका घरा कणि जांछा, पुछी लीनी बाता।
कतीका जाणया तुमु, पड़ी गेछा राता॥

साँगे गों परखो मंलै, फेरौछा बेलिया ।
तुमरा गों केका हैं, जवाना चेलिया ॥

गांव का एक व्यक्ति

एक नानी हामरी छा, एक छा ककको ।
जवाना हे ेछा एका, तिराई भगै की ॥
कब आछा घर बटी, कती कौछा कामा ।
कां तुमरौ घरा हलौ, क्या तुमरौ नामा ॥
घर कखी ब्या तुमरौ, छैं कि निहांतिना ।
पछिना बिगड़ी जानी, चेहणी का दिना ॥

कन्यार्थी

निहांतिना कसी कुनूं, सीपा नैं सहूरा ।
घरा जै कुशवा हनी, क्यलै आनौ दूरा ॥

*

मौता बाता क्या लगानू, सौतमा निदिना ।
चेालको अकला कंठा, हमता निलिना ॥
कौस अना घना त्यरौ, रुपयों की ढेरा ।
क्यलैका सौतमा घुला, देखी सुणी बेरा ॥
तीना चारा दिना हैगीं के निमिली वाना ।
दसा बारा गांऊ फेरा, मैं हय हैराना ।

*

अब एक लड़की मिली

बहुत हैरान होने के बाद तब एक लड़की मिली जिसका मुख तो डलिया जैसा है और होंठ बड़े मोटे पैर खम्बे जैसे यानि ऐसी बदसूरत है। उस लड़की के बाप ने कुछ मन्जूरी सी दी तो रात उसके घर में डेरा कर दूसरे तीसरे दिन लड़की के बारे में बातचीत चली।

तब लड़की का पिता कहता है सौत भी तुम बता ही रहे हो उम्र भी तुम्हारी (सयाणी) पक्की है, क्या बात है ऐसी छोटी लड़की क्यों ढूंढ़ते हो? कोई अपनी बराबर की लड़की ढूंढ़ते। मेरी लड़की से टीका करने वाले तो कई आये पर मेरी बात कहीं नहीं बनी लेकिन तुमने तो आज तीन दिन से घरना ही दे दिया है।

×

तब मिलि एक बाना, थुमि जसा खुटा ॥
मुखड़ौ छुत्यागै जसौ, बकवा छैं ऊठा ॥
वकै घरा ड्यरौ करौ, पड़ि रौय गता।
तिसरा दिनमा पुछी, बेहुली की बाता ॥
सौना लकि बतां मछा, उमरा सयाणी।
क्यलकि खोजण मछा, बेहुली अयाणी ॥
माङ्गणिया भौत ऐगीं, मेरी कैं निठरी।
तुलै ड्यरा बादी रौछा, तीन दिना भरी ॥

सारांस

अब मैं लड़की तुम्हें दे ही देता हूँ। सौत तुमने बता ही दी है। अपने अपने भाग का खाना है। कितने कन्यार्थी मेरी झुपुली के

आए पर आज मेरा दिल तुम्हारी ओर न जाने क्यों झुक गया है। मैंने लड़की तुम्हें देदी। तब कन्यार्थी कहता है अच्छा फिर अब एक बात बता दीजिये कि खर्चा क्या लगेगा। अब तो मैंने दुल्हन जरूर ही ले जानी है। तब कन्या का बाप कहता है।

कन्या का बाप

अच्छा भवा देई द्युला, त्वीलै निरभाणौ।
सौता तुलै बतै हैछा, करमौ कौ खाणौ॥
माङ्गखियां कतु ऐगीं, मेरी झुपुलिका।
तुमरी बखता आजा, क्यलै लागी हिका॥

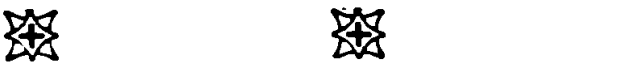

मैंलैता बेहुलो आब, जरूरै लिजाणी।
एक बात सुणै दियो जो रुपया खाणी॥

सारांश

खर्चा क्या लगेगा तुम जानते ही हो जो भी रीति रिवाज है। (सोलह बीसी) ३२० रु० खर्चा तो यहां देना ही पड़ेगा। बाकी जेवर भी सभी तुम्हें लाने पड़ेंगे फिर लड़की की मां को भी खुश करना ही पड़ेगा फिर लड़की की बहनें भाई बिरादरों को, गांव का प्रधान है उसे भी खुश करना पड़ता है। उसका दस्तूर होता है जो भी खर्च होता है रीति रिवाज में ब्राह्मण हमारे पुरोहित जो है हमारे सभी काम उन्हीं से होते हैं। देवता भी वही नचाते हैं। दुःख बीमारी में दवाई भी देते हैं हर प्रकार का कष्ट हमारे लिए सहन करते हैं। मेरी लड़की का ब्याह जब आज हो रहा है तो उन्हें और कब मिलेगा उनकी दक्षिणा भी अच्छी देनी पड़ेगी।

+

कन्या का बाप

सोला बिसी मैंलै खाणो, सौत सवै बाकी ।
अस्सी कौ जिवर ल्युला, खुशी रैंगे बांकी ॥
चेलिया बेटिया भौतै, भयाती लै द्यला ।
ड्यानी छा मौटौकौ और, बट घटा ठेला ॥
एक रुपैं पधानौ कौ, चेलि ब्यहै बेरा ।
मंगल्यारी बैठी रैंनी, ख्वरौ ब्यापी बेरा ॥
बामणा ज्यू भला मैंसा, खुशी बणै जाणौं ।
चेली मैंलै आज ब्यहै, वैलै कबा पाणौं ॥
देवता लै ऊँ नाचनी, दवाई लै दिनी ।
हर कामा काजा म्यरा, उयीं निरभानी ॥

कन्यार्थी

कन्यार्थी कहता है सब ठीक है जो तुम कह रहे हो वह सब कुछ मुझे मन्जूर है। अब ब्राह्मण का घर कितनी दूर है जरा जन्म पत्री बनवाकर ग्रह-साम्य करा लूंगा इससे रीति रिवाज के मुताबिक शंका मिट जायेगी।

जो बाता तुमुलै कैछा, सबा मन जूरा ।
बामणों कौ घर हालों, यांबै कतु दूरा ॥
एका घड़ी मैं जैयानूं, कुनई लियानूं ।
जुड़ाई सुजाई बेरा, बहिमा मिटानूं ॥

सारांस

कन्या का बाप कहता है क्या करोगे जन्म-पत्री से ब्राह्मण क्या जानते हैं ग्रहनों की बात ? हमने देखा है बड़े-बड़े ज्योतिष ब्राह्मणों के

घर में लड़कियां विधवा पड़ी हैं ऐसे विद्वान होते तो अपनी लड़कियों के ग्रह ठीक जुड़ाते। तुम ग्रहों की शंका मत करो सगुन विचार कर लो। यह लड़की मेरी ऐसी शुभ घड़ी नक्षत्र में पैदा हुई है कि इसके पैदा होने के बाद मुझे अच्छे दिन मिले हैं। मेरी सन्तान इससे पीछे अच्छी हुई। इसकी सूरत ही रसीली है और काम धन्धे में भी निपाण है मां तो इसकी सीधी-साधी है। पर यह लड़की बड़ी हुस्यार है जेठ १० पैट से बीसवां वर्ष इसको लगा है।

कन्या का बाप

कुनई लै क्य कर्छा, बड़िछा जसीली।
आफी देखी जैंछ वीकी, मुखड़ी रसिली॥
तुम्रु क्यलै कर्छा मछा, इननौं खरशा।
जेठा दशा पैटा बटी, बीसू वां बरशा॥
बामणा क्ये नि ज्याड़ना, ग्रहौनौ की बाता।
ग्रहौनौ को रखौ निछा, बामणों का हाता॥
बामणों को ग्रहौ देखी, के कौणी निशानी।
पैसे की दछिणा मजि, दिन गवै जानी॥
बामणों का घरा देखौ, विधवों कौ टानों।
सगुनों विचारी लिणौ, जैंमें मन मानों॥
इनिका हइया बटी, मैंलै पाई दिना।
औलादा लै ठैरी मेरी, इनिका पछिना।
सता सिंपै येसी छा य, क्य बतानूं बाता।
कामका लिंज्रिया नानी, निदेखनी राता॥
मां इनिको सिदी शादी, यो बड़ी हुस्यारा।
मौतै बाता क्य लगानूं, आपणोंछा न्यारा॥

जवाई

कन्यार्थी अब जवाई बन गया है। तब कहता है बस बस ससुर जी बहुत क्या कहना है जो तुमने कह दिया सो ठीक है। बाकी जहां तक सौत की बात है उसको तो मैं हाथ पकड़कर निकाल दूंगा अगर उसने कुछ कहा तो क्योंकि उसके न तो बाल-बच्चे होते न वह कुछ सकल सूरत की ही है। मेरा उससे दिल ही हट गया है। उसने मुझे बड़ा हैरान कर दिया है। तुम ये लो रुपये दुल्हन के कपड़े मंगवाओ, डोली वाले बुलावो बारात बिदा करावो।

कन्यार्थी

है गोय है गोय सौरज्यू क्य कणौछा भौता।
हाथा थामी निकाउला, जो रिसाली सौता॥
न ऊनिका नना तिना, न ऊ भलि बाना।
उनिलै ता करि दिया, मैं बड़ै हैराना॥
रुपया भितेरा धरौ, डनेरू बुलावो।
दुकान कतुक दूरा, कपड़ मंगावो॥

कन्या का बाप

ऐसी क्या जल्दी है दस दिन के बाद बारात ले आना। नगारा लाना है तो नगारा भी ले आओ अच्छी बारात लाओ।

बर्यातै कि रुचि छै ता, घरा कणि जावो।
दशा दिना जागी बटी, नांगरी लिआवो॥

कन्यार्थी

अजी बारात का क्या करना है सब ठीक है मेरा तो यह मजबूरी का ब्याह है कौन बराती आवेगा। जब मेरा खुशी का ब्याह था बड़ी

बरात हुई थी सब भाई बिरादर इष्ट मित्र बुलाए थे। तीन मन तो आलू लगे थे। ६ सेर मसाले आए थे। बाजे गाजे सब थे। अनाज सब घर का था। उस साल फसल भी अच्छी हुई थी। अब तो यही सब ठीक है। बारात बिदा करा दो।

बिपतौ कौ न्या छा म्यरौ, कोछा बरेतिया।
जैदिन जसीली न्याय, सब खवै दिया।
तीना मखा आलू लागा, नौ सेरा मसला॥
नाजै किलै भली हैचा, वी साल फसला।

सारांस

बारात बिदा होकर जब गांव के निकट आ गई तो गांव के बच्चे सब खेतों के किनारे खड़े होकर देख रहे थे लेकिन पहली घरवाली डलिया में सिर लुकाए गाली देती हुई किवाड़ बन्द करके चली जाती है। बच्चे कहते है आ गई बरात आ गई बरात। जिस घर में बरात आई है उस घर के किवाड़ बन्द हैं। तब वह कहता है हे भगवान कौन काम करे कौन तम्बाकू भरे। बिरादर कोई पास नहीं आते अब यह कैसी आफत आई। आप तो बेहुली को लिए अकेला ही आया लेकिन मैंती ३० आदमी आए हैं। अब क्या होगा पुरानी घर वाली तो गाली बकते-बकते सो गई हैं लेकिन इन मेहमानों की खिदमत कौम करे और गांव में (छकोड़ी) सौगाद कौन बांटे। यह ब्यावली लड़की क्या करे आज ही तो आई है किसी को जानती तक नहीं उसे रास्ता तक मालूम नहीं किधर पानी है किधर क्या है ?

बारात का आना

बर्याता ऐगेछा तैकी, गौका तला पना।
खेतु का तिराई बटी, देखि रया नना॥

ननां कनी आई गोंछा, बेहुली लीबेरा ।
घर की पुराणी सेगे, द्वार ढकी बेरा ॥
को घुछा तमाकू भ्यार, को करुछा कामा ।
य कसी आफत ऐगे, क्य कनू हे रामा ॥
को जांछा बाखई पना, कों खोलों डल्योणी ।
पैलिकी सवांसै सेगे, के कैंछा खयोंणी ॥

सारांश

मर्द पुरानी औरत को समझाकर कहता है तू क्यों नाराज हुई है तुझे किस ने क्या कहा है मेहमानों के बीच में रूठना ठीक नहीं मेरे तो घर पर बराती आये है और तेरी यह हालत है तुझे एक सी मति रही सारे जीवन भर मैंने ब्याह तेरे लिए ही तो किया है। अभी लड़की छोटी है जब बड़ी हो जाएगी तो तुझे आराम हो जाएगा। तू घर में खाना बनाने वाली रहेगी हम बाहर खेती का काम करेंगे। तूने घी का हड़बियागा (काठ का डब्बा) कहां रक्खा है ? तुझे तो खबर ही है इतनी बातें करते हुए हाथ बढ़ाना चाहता था वह काट खाने को आई तो बाहर को भाग कर आया पलट कर देखा भी नहीं। कहती है इस नीच औरत की (मुनई) सिर खायेगा जिससे प्यार कर रहा है। ये तो क्या कर पाएगी मैं दराती की धार से इसको चीर दूंगी। उसकी बातें सुनकर अब जहर चढ़ गया। मन कहता है खुकुरी निकालकर इसका सिर काट दूं पर अभी बेइज्जती हो जायेगी। ये तो निगुरी औरत है ऐसे ही रहने दो मेहमान आए हुए हैं।

उस नई बेहुली के मैत वाले कहते हैं जरा बैठ जाओ क्या जल्दी बाजी में लगे हो ! तुम्हारी पहली घरवाली कहां है हमने अभी तक नहीं देखी।

मर्द पुरानी औरत से

तु कि लैका रूमै रैछे, ते काले क्य कय ।
दस का बीचम भाजी, रिमाणी क्य हय ।
भ्यार ऐ गैं बरेतिया, त्यरा हों लछण ॥
बेक नसी मती रैगे, ऊंगा भछणा ।
त्यगै लिजि न्या करौछा, म्यर जै क्य छिया ।
कत कणी घरी रौछा, द्यों कौ हड़पिया ॥
मोवा पोरू ठुली हैली, ते आलों ऐरामा ।
तु रहली घरा कणी, हमा कुला कामा ॥
झपड़ो लैं हय जबा, दियैं झणा गया ।
ते छिया खबरा सबा, उनिका लै हया ॥
हाथा जैं थामुला कौंछी, बुकै जौसौ खाय ।
भ्यारा होंणी माजी आय, पछिना निचाय ॥
नौली की मुनई खालैं, जैं मानछै प्यारा ।
झो खयोंणी क्या रहली दातुलै की धारा ॥
मनमा जहर चड़ो, निकाऊ खुकुरी ।
दशु में हितक हली, ये रन्डा निगुरी ॥

मैती लोग

अब भिता बैठी जावो, मारा मार क्येकि ।
तुमरी घरै की मैणी, हमुलै नि देखी ॥

सारांस

अजी कल से पड़ी हुई है बुखार आया है नहीं तो अपने हाथ से सब कुछ कारबार करती थी तब लड़की के मैती लोग जो मेहमान आए हुए थे सब समाचार लडकी के बाप से कहते हैं देखा तूने लड़की के दिन बिगाड दिए हमने कहा था सौत में लड़की मत दे पर तूने हमारी बात नहीं मानी देख लड़की एक कौने में मुरझा कर पिंजरे के पंछी की तरह बैठी तेरी तरफ देख रही है ए तेरा सुधरा हुआ काम है। तब बाप कहता है मैं भी तो जब लड़की हमारे यहां आएगी तो फिर दो साल के बाद भेजूगा।

दोहा—कल से है घर में पड़ी, आता बड़ा बुखार है।
नहिं तो अपने हाथ से, पूरे करती कार॥

*

देखी रया हाला चाला, बेहुली का मैती।
तुलै क्यलै करी भागी, नानी की कुगती॥

*

सौत मजा न दे कौछी, हेलै कती मानी।
द्वाहारा का कुण पना, भुमि रैछा नानी॥
सिदि सादो नानी कणि, सौत मजा दिया।
चैहै रैछा ऊलू जसी, तेरी सपाड़िया॥

*

नानीं जबा आली आबा, भोवा पोरु मैता।
दै पुजौंला मैंलै किता, आधिना का चैता॥

सारांस

अब लड़की कुछ दिन बाद जवान हो गई है पहली घरवाली भी बुल्ते में ही है अब दोनों बराबरी की हो गयी है। अब उस आदमी की ज्यान को कांटे पैदा हो गए एक दिन साँझ से ही झगड़ा शुरू हो गया। (राम्रियों मान्रियों) वाली मलोज मार पीट मोघा खोची (घैलगा घैलग) सारी रातभर रह गई सारे गांव के लोग सो गये फिर उन्होंने (जानरी) चक्की चलाई अपनी २ रोटी बनाई खाई उसके लिए किसी ने रोटी नहीं बनाई। वह उनके झगड़े को देखता ही रह गया। कुछ समझ में नही आया नारियल के हुक्के में तमाकू पी रहा था फूटी नारियल थी उसका पानी चू-चू कर निकल गया और चिलम में आग बुझ गई हुक्का उसके हाथ में ही है उसको होश भी नही है कि हुक्का चिलम में आंच पानी तमाकू है या नहीं वह दोनों रात भर लड़ती रही सवेरा होते समय एक भीतर सो गई दूसरी (गोठ) नीछे वाली कोठरी में सो गई आप वह हल चलाने चला गया। दोपहर जब घर आया तो समझा था कि अब तो खाना बना होगा रात भर तो यह दोनों लड़ती रही हाथ पैर धोकर रसोई घर में गया तो देखा तो रोटी रखने की डलिया खाली पड़ी है इधर उधर देखा खाना कहीं नहीं है पुरानी औरत तो सोई थी देख ही ली अब दूसरी (नौली) नई औरत को देखने लगा इधर उधर देखा (छान) गोसाला में भी देख लिया कही नहीं है अब लोगों से पूछने लगा किसी ने मेरी (नौली) नई औरत देखी है कहाँ गई होगी तब एक औरत बोली अभी २ तो यहीं थी पार्वती से बोल रही थी गोठ में तो नहीं है। यह सुन कर गोठ को सीधा ही सहेज से गया नौली वही साई है तब कहता है कि तू साई क्यों है रोटी नहीं बनाई क्या।

दो सौतों का झगड़ा

नानी लै जवान हैगे, ए गोय जोमना।
मालकै की ज्याना हणी, बुती गया कना॥

झगड़ा की जड़ा जागी, सवासैं कै वेरा ।
आफी आफी द्वि तरफा, बनी रई शेरा ।
रानियो भानियो रैगे, सारी रात भरी ।।
धै लागा धै लागा हैगे, खणै को नि ठैरी ।
सारै गौंका सेई गया पै लागी जानरी ।
मुखड़ी देखियें जसी तैलुवा बानरी ।।
अब क्या करौणौ हय, बिगड़िया भागा ।
फुटिया नैरुआ मजा, मुझी गोछा आगा ।।
राती परा पकैं खया, आफी आफी रुवाटा ।
एक सेगे मला खना, एक सेगे ग्वठा ।।
बारा बजे काम करी, घरा कणी आय ।
मुख हाता धोई बटी, मला खना चाय ।।
ओर पोरा चायो मैंलै, खाली पै डल्योणी ।
पैलिकी रिसई रैछा, कथांगे खयोंणी ।।
कैलै मेरी नौली देखी, उना उभां जानी ।
ओंख्याड़ी कोंख्याड़ी चैहै, निहातिना छानी ।।

*

ऐलै लैकी बुलै रैछी, पारभती हौणी ।
कि लुकिगे ग्वठा पना, उसरै की दोंणी ।।

*

मुरुड़ मुरुड़ मोष, मला सना मठा ।
तु क्यसैका रिमै रैछै, ज्या मागी निरूटा ।

✿

बांछै तू नि जानै यावै, कै मांगछै न्यारा ।
इ दिना मानम चाहे, एलै कैदे न्यारा ।।
जै दिना म्यकणि न्याछै, कऽछिया कबूला ।
चुपै रयों तब बटी, आवा बिल कुला ।।

तब नौली कहती है जाता है या नहीं यहाँ से नहीं तो मैं तमासा दिखा दूंगी तेरी इज्जत बिगाड़ दूंगी यदि दो दिन जिन्दगी चाहता है तो अभी मुझे न्यारा कर दे।

जिस दिन मुझे लाया था उस दिन तेरा क्या इकरार था मुझसे तूने कहा था जैसा तू कहेगी वैसा ही करूंगा पुरानी औरत से मैं क्यों डरूंगा तुझसे बिना पूछे कोई काम नहीं करूंगा। मेरे पिता जी भले आदमी थे। उन्होंने भी इस बात का विचार नहीं करा कि सौत है उन्होंने तुझे लड़की दे दी अब मैं मोत वात नहीं जानती अब तू मुझे न्यारा कर दे मेरा हिस्सा दे दे।

नौली औरत

जस तु कालो कय, वसै मैं करूंला ।
घरै की पुराणी देखी, क्यलै की डरूला ।।
ते पुछी करूला कय, सब काम काज ।
दैली की पुराणी तेरी प्यारी हैगे आज ।।
म्यरा बाज्यू भला मैंसा, नि विचारी सौता ।
म्यरौ बांटौ धरी दे तू, निजाणनौ भौता ।।

अब वह दुखी होकर भाई बिरादरों से कहता है कका ददा जरा इधर आओ तम्बाकू पीयो इन दोनों का झगड़ा निबटा दो इनका हिसा न्यारा न्यारा करा दो।

कका ददा यथां आओ, तमाकू खै जाओ।
भितेरा का भना कुना, अलगा कै जाओ।

भाई बिरादर कहते हैं न्यारा न्यारा मत कहो न्यारा होने से बड़ा दुःख हो जायेगा। यह तुम्हारी बड़ी भूल है जो तुम न्यारा होने की बात सोच रहे हो।

दोहा—न्यारा न्यारा मत कहो, न्यारा दुख की मूल।
जो तुम न्यारे हो रहे, बड़ी तुम्हारी भूल॥

—※—

लेकिन नई घरवाली नहीं मानती। कहती है मुझसे कोई मत बोलो मैं बहुत दुःखी हूँ न्यारे हुए बगैर नहीं रहूँगी।

उसका सम्बन्ध कुछ ऐसे लोगों से हो गया है जिनका घर बार कुछ नहीं है रडुवे हैं वह इशारा करते हैं सुख चाहती है तो न्यारा हो जा नही तो बड़ा दुख पायेगी। उनके इशारों पर बहू कहती है ससुर जी तुम तो साथ रहने का नाम ही मत लो। मैं सब देख चुकी हूँ मेरा हिस्सा देते हो तो न्यारी रहूँगी नही तो चली जाऊगी।

न बुलावो क्वे म्यहोंणी, म्यहौणी न लागौ।
इनुलै पराणी पर, लगै हाछा आगौ॥

※ ※ ※ ※

भलो चैंछै न्यार हैजा, रहली मजमा।
तु किलैकी भूली रैछै, हितनी सजमा॥
लता लूण हम द्यूला, घागरी आंगैड़ी।
दघड़ै जै रैछैं जबा, रहली नांगड़ी॥
सौरज्यू न लियो तुम, दघड़ा का नामा॥

पुना पुना जर्गी गेयू, भाई गेछा फामा ।
बांटो दिशा न्यारा हुंनु, नतरा मैं जानुं ।
मकली मकला सबा, दषड़ा निखानुं ।

अलग अलग होने के प्रोग्राम

अब अलग अलग होने का प्रोग्राम बन गया है । सब चीजों के हिस्से बांटे होने लगे । भाई बिरादर कहते हैं तेरे मन में क्या है तूने हमारी बात नही मानी । अब तू किसके साथ रहेगा या तू भी अलग रहेगा । दोनों से पूछ लिया है कोई भी तुझे साथ में रखने को राजी नहीं है ।

* बिरादर कहते हैं *

तेरी क्या कुशल बाता, निमान नै आजी ।
त्यरो बांटो कथां घरूं, कथां छै तू राजी ॥
दियैं सौता पुछी हाला, कवे निकौनों होई ।
जमेंखी छालैंछै अबा कना हूना भोई ॥
एका नैंगे मल खना, एक ग्वठा पना ।
चाखा मजा धरी दिया, मालका का भना ॥
एकी लैं कामड़ थामा, एकिलै पिछोड़ी ।
पुराणी गुदेड़ी एका, म्यरा हाता पड़ी ॥
तीना झंटा कुटमाका अलगा छै न्यारा -
अपणां मनका हैगी खुद मुखत्यार ॥

अब सब हिस्से बांटे हो गये । एक औरत ने कम्बल ले लिया एक ने चादर ले ली पुरानी गुदड़ी उसको मिली । तीनों जने घर के अलग-अलग हो गये । पुरानी भीतर वाले कमरे में है और नई वाली (गोठ) नीचे वाले कमरे में है ।

सारांस

अब रोज नीचे वाले कमरे में उसके दोस्त रडुवे लोग बैठने को आ जाते हैं गाते हैं बजाते हैं। कोई साग सब्जी ले आते हैं कभी कोई रात को घर चले जाते कोई वहीं रहते हैं वहीं खाते हैं वहीं सोते हैं।

* नटुओं के हाल *

ब्यावा होंणी रोज रोजै नटुवा ऐ जानी।
कैभें घरा न है जानी कैभें ओती खानी॥
तवे लिपुछां ग्वठा कैणी कवे सोरुछा माटौ॥
कवे लियांछा ब्यावा होंणी पाई ंग को आठौ॥

* दो ब्याह वाले पति के हाल *

ये सब हाल नौली के देखकर अब उसके दिल में बड़ा दर्द होता है। अब वह कहता है इसको जरा भी शर्म नहीं रही। गुस्से में आकर एक हाथ पर (लोडा) बट्टा उठाया और दूसरे हाथ पर लट्ठ उठाकर (गोठ) उठाकर गोठ को जाता है। कहता है सबको मारकर खत्म कर देता हूँ। जब मारने को दौड़ता है तो भीतर के कमरे में से पुरानी घरवाली कहती है। क्या भूला हुआ है भालू की तरह झपटेगी और तेरे हाल खराब कर देगी देखा नहीं कैसी मोटी हो रही है।

* मर्द गुस्से में *

पतिका शरीरा परा लागि गोछा आगा।
क्यलैं की जलाण हय, अधरमी भागा॥
क्या करूं नु बंची बेरा मरौणों ऐ गोछा।
जरालैं की डरा नि है, यसौ क्या है गोछा॥
एक हाता ल्बड़ौ लिया एक हाठा लठा।
सबु मारी दिनं कौंछा लागि गोछा बटा॥
मोटै रैचे थ्वरौ छैसी, लागी रैछै खुदा।

मातो होंसी बटी रहे सुली गये सुदा ॥
बिलकसी मालु अभी, बिगाड़सी हाला ।
आज्ञा हैर्मा अभी तेरी, कथां गोछा काला ॥
स्वहोंसी फुलस लागे, मुनई का केशा ।
उन्साठी बरषा हेगी, साठों परवेशा ॥

✱

तेरे बाल सफेद हो गये है उनसठ साल पूरे होकर साठवां साल शुरू हो रहा है तुझे अभी तक अक्ल नही आई ऐसी बुद्धि तेरी पहले कहाँ गई थी जब दूसरी शादी करने को चला था ।

(बोठ) नीचे वाले कमरे में अब चार दिन खूब चहल पहल रही । कोई टेढ़ी टोपी वाला आता है कोई टेढ़ी टांकी (साफे) वाला आता है । कहते हैं अरे यहां कोई लड़का खड़ा है तो तबाकू भरवा दो जंरा होका देखा आयेगा गीतों का प्रोग्राम ठँरावो मैं हुड़का डमरु ले आता हूं ।

अब नटुवे लोग च्याखुड़ी म्याकुड़ी गीत गाते हैं । उस नोली औरत से कहते हैं कि तू फिकर मत कर हम लत्ता कपड़ा अपने आप लाते रहेंगे और मन के से बढ़िया कपड़े लायेंगे आदि आदि बड़ी बड़ी डींग मारते हैं ।

नई औरत के समाचार

चार दिना खुपै रहे हेकी झराफरा ।
चार दिन यथांउथां, दियै दिना घरा ॥
काकी टेढ़ी टोपी हली, काकी टेढ़ी टांकी ।
म्यरा लिमातरा हैरै, सारै गौं की आंखी ।
ऊ हमौरी सार्गो लानी जै संग पछयाण ।
जै दघड़ो हैछौ आवा, मुनौऊं की घांघा ॥

जसौ हलौ भुगतुला, गीतू कि ठरावो।
क्वे एपना नान छैता, तमाकू भरावो॥
तु कंना भुननी भांणी भटुकौ कुडुकौ।
ऐलैं बटी क्यलै सिंछैं मैं ल्यानू हुडुकौ॥
ऐलै बेरा फसलौं कौ क्य भलौ छा जोरा।
मनादै आंगड़ी न्योंला लटूलु की कोरा।
तेरी खेती मजा हैगो नमोडुवा तोरा।
गोरू भेंसा निजोड़णा, खालि होरा होरा।
सेतेंणी जै मना तेरी, मैंतिये तु कांठ।
कै दघड़ी बणां जाली, टोड़ि द्युला भाट॥
च्याखुड़ी म्याखुड़ी गानी, बचुली रफला।
खीर ल्यानी लापसी क्वे, दूद दै का ब्यला।

एक दिन बाहर से कोई बोलता है :—

दो०—अरी कौन है इस गोठ में किससे करती बात।
साग सब्जी क्या बना, कुछ लगे हमारे हात॥

गोठ से उत्तर मिलता है :—

आलू बने हैं गोभी बनी है, टिमाटर पड़ें चार।
इमली की एक चटनी बनी है तरकारी रसदार॥

*

गाना—आवो बांके देवरिया तरकारी ले जावो।
मूली बनी है बैंगन बने हैं, नीबू का बना अचार॥
पालख बना है मेथी बनी है फुलके रखे चार॥

×

बीच चले नागंगी चले बाव रहे फराव।
मार्ली इनको है नहीं बस बिन बाम मुखाय॥

*

आवो थाके देवरिया तरकारी ले आवो।

उत्तर

दोहा—पानी भरा मशीक में रहा पीठ लटकाय।
बगीचा कोई है नहीं जिसमें सीचा जाय॥

इस प्रकार की धूम धाम कुछ ८-१० साल नौली की रही फिर उमर कुछ पक्की हो गई चेहरे का रंग बदल गया अब कोई उससे बोलता भी नहीं है।

मौज मजा काटी दिया, आठ दस साला।
मुखी लियाम्यरा दाज्यु, आधिन का हाला॥
उमर लटिकी गेछा, क्वे नि अना पासा।
यथां चैंछ ऊथा चैंछा हैगे छा निराशा॥
जैंका घर कणि जानूं बोलि चर खानी।
बटा घठा मेट हैता, मुख फरकानी॥
एक दिला यस कुंछा, वैंठुं देहे मजा।
म्यरो बदनाम हर्यो आज यो गों मजा॥
मालखा है न्यारा तब, हिजुलै कराय॥
क्वे नि कना म्यहां आब, खाचै कि निखाय।

अब नौली कहती है

अब नटुवे लोग कोई आते भी नहीं। अगर रास्ते में कहीं मिलते भी है तो मुंह मोड़कर निकल जाते है कनौती काट लेते हैं। किसी अपने पराए के घर पर जाती हूँ तो व्यंग सुनाते हैं मन में ऐसी आती है

कि इन नदुमों के घर का दरवाजा घेरकर बैठ जाऊं फिर सोचती हूं कि मेरा ही बदनाम ज्यादा है इनका क्या बिगड़ता है।

मेरा सब कुछ इन्होंने ही तो बिगाड़ा है। मालिक से न्यारा भी तो इन्होंने ही कराया। इन्होंने ही तो कहा था।

*

भलौ चैंछै न्यार हैजा रहली मजमा।
तु किलकि भुलि रैछै निहाति सुगमा॥
हम ल्योंला लता लूणा घागरी आंगड़ो।
दगड़ै जै रौनू कैंछै रहली नांगड़ी॥

सारांस

अब वह बहुत दुखी होकर कहती है ये लोग तो उन बातों और रंगगेलियों को भूल गए हैं मेरे पति ने तो मुझे बहुत समझाया और धमकाया था सौत ने भी मेरे से ज्यादा कुछ नहीं कहा मेरी ही उल्टी समझ थी समझ में उल्टा आया यह मेरे भाग्य की बात थी मैंने मालिक की नाक भी कटवाई और सौत कीं भी इज्जत बिगाड़ी अब यह मेरे ही किए कर्म मेरे आगे आ गए मैत भी जाऊँ तो भाई भी नाराज हैं माता पिता भी गुजर गए हैं। भावी अपने आधिकारवाली है वह मुझे मुंह नहीं लगाती है।

*

कैलै कय लता द्युला, कैलै कय लूणा।
आजा भुली गई सबा, ऊमरा का गुणा॥
मालखा हाकनैं छिया, कय कय सौतैलै।
उलटौ समझौ मैंलै आपणी मौतै लै॥
मालखा क नाख काटौ, सौतौ कौ भरमा।
आपणा आधिना ऐगीं आपणा करमा॥

ऐसा दुखी करि बानू हसी गोदा माई।
इसा राज्य मरी गई, मोजी का अंघ्याई ॥

*   *   *

सब कहनी है कोई मेरे अपने पराये हितैषी होते तो स्वामी जी को समझा देते मुझे वह अपने साथ ले लेते अब मैं अपनी बिपता किस से सुनाऊ मेरी कोई भी सुनने को तैयार नहीं है। कहती है हे राम हे भगवान अब मै क्या करू किधर जाऊं अब बुढ़ापे में यह कैसी आफत आई मैंने पति की बातों को तब खेल मखौल ही समझा जवानी में मैंने तीन मखमल के कपड़े पने है और बिठ्या की सुरकि लगाई आज मुझे फटे चीथड़े भी नही मिलते कहती मैंने इन नटुवों का साथ पकड़ा पति का कहना नही माना ये बखत की बात है आज मुझे अक्ल आई है।

मालिको को कैं निमानो करी मनमानी।
अकला उमर भागी दघड़ै नि आनी ॥

अब ३८ वर्ष की उम्र हो गई है अब क्या होता है अब तो मैं मर जाती अच्छा होता।

दो०—आछे दिन पाछे गये, हरि से किया न हेत।
अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत॥

*

करै म्यरा आपणा हना, स्वामी समझाना।
स्वामी का दगड़ा म्यरो मेल करै दिना॥
हाई रामा हाई शिवा, कसी है आफता॥
बुढ़ीनी बखता आवा, बिगड़ी इजता।
जोमना में आई बेरा, छोड़ि दियो मेला॥
मालखा अकला यूछी, मैंल मानो खेला।

गोंन मनराजा पैंरौ, पिथ्या की सुरूकी ।।
आज निमिलनी आबा, फाटिया लुरूकी ।
नटुओं का साथ रय, कै कै कैं निमानौ ।।
अड़तीस साला हैगी, कि मैं मरी जानौ ।
मालखा ज्यू ग्वठा हौणो, देखोंनों निहांती ।।
जौस हलौं भुगुतुला, मरिनौ निहाती ।
कै कै कैं निभानौ मैंलै अकलै की वाता ।
दिवान सिंह विन्ती कनी, जोड़ी बेरा हाता ।।

नौली का भावर को जाना

अब कार्तिक का महीना लग गया है गेहूँ बोये जा चुके हैं जाड़े शुरू हो गए हैं और नदियों में पानी भी कम हो गया है। भाबरी लोग मावरों को जाने लग गए खास कर रुयोंणी द्वारसौ के लोग मावरों को जाते हैं गेहूँ वोकर घर का काम काज पूरा हो जाने के बाद घर की लिपाई पुताई करके घरों को बन्द करके गऊ भेंस भेड़ बकरी घोंडी लोडी डलिया टोकरी में कुत्ते बिल्ली के पिल्ले भी रख सामान लिए जाया करते हैं गाते बजाते हैं हुड़किये भाट लोग भी जाते हैं बड़े २ घरो बाले भी जाते हैं बड़े लोगों की औरतें और प्रधान चौधरी सयाणे लोग घोड़े में सवार होकर जाते हैं बाकी सब लोग अपने अपने बुते के अनुसार दरी गुदड़ी सब सामान ले कर जाते हैं रास्ते में गीत झोड़ा भगनौला चाँचारी मालसाई व (हरूहीत) के गीत जागर गीत आदि गाते जाते हैं जहाँ रात पड़ जाती वहीं डेरा करते हैं वही गाते बजाते हैं मैंफिल हो जाती है।

भावरियों के समाचार

कार्तिको मैंहैना लागौ, सुरू हैगो जाड़ा ।
झों लै सब बुती गई, घटी गयी गाड़ा ।।

ल्योंखो द्वारसों का जानी, भावरा सौ भेशा ।
गाड़ी घ्वड़ी गोरू बछा बकरा लै भैंसा ॥
ठुल घरै की सैबी छा जो उ घोड़िमा जाली ।
गरीब गुल्बों की कि छा ख्वरा मजा डाली ॥
ठुला ठुला भैंसा हैंला घ्वड़मा सवारा ।
देखी आनू क्या है रौछा भावरा कौं कारा ॥
सांवला दे मोटा ढांका, ठेला बका वांणी ।
पुराणों चिन्किया फेरी आनौ च्वारा पाणी ॥
पापड़ी बसटिला वटा, हाथि कौ छा घरा ।
लाला ढांका तका जौंला, तवा ओंला घरा ॥

भावरियों के समाचार

डालि ऊना नारियला, डालि ऊना ब्यरा ।
चार दिना करि आनू भावरै की सैरा ॥
कनमा रमटा हली, ख्वरा मजा ब्वजा ।
काखी परा नानौ थामौ, है रैछा असजा ॥
खुटै मुरल्यारा सैणी, हाथ थामी जानी ।
हैंसी बक बाई कनी, बिणाई बजानी ॥

अपने अधिकार वाली औरत झोड़ा गाती है

हिटौ म्यरा घोरा आब, भावरा जै औंला ।
चार दिना भावरै की सैर करी औंला ॥
हंस राजा मकुवा कौ भात खाई औंला ।
भिनाका खरका पना डेरौ करी औंला ॥

झोड़ा

खर कका आख काखा, पाकी रैनी च्यरा ।
औरों का दघड़ा निर्जों, कवे कय हनी म्यरा ॥
पन्यारा का सारी हुँना, कया हैरौ हरिया ।
तुमरा लिजिया म्यरा स्यूड़ा छैं धरिया ॥
रुपसै की खुई मजा, दोहतिया फीणी ।
जब मैं घागरी ल्योंला, त्वील बिछैं दीणी ॥

*

नटुओं की भीड़ छुटी हिनी का पछीना ॥
व्यरौ कवी कौंला कंछा छिपी गोछा दिना ।
हुड़किया दुतरिया भावरा सों जानी ॥
घरा का दुहारा ढकी लिपी पैंसी जानी ।
उनरा दगड़ा राती माटू माटू जैंछा ।
सिकौड़े की चोट मारी, पछिना चहैंछा ॥
भाटा लोगा नसी गई दाड़ौ धरी बेरा ।
धानू की फसला भली ल्यूला एक सेरा ॥
जभणी भावरी चला निमिलनौ बाटौ ।
सोचि जांछा उड़ैं दिला बाजारौ कौ आटौ ॥

*

इस प्रकार वह लोग सावलदे मोटा ढ़ाक बंका बाणी चिल किया हाथी घर लाल ढ़ांक च्वर पाणी आदि मावरों में जाते हैं उन भावरीयों के साथ अब वह नौलि भी चली जाती है सिर में धोती तक नहीं है ओढ़ना विछोना कुछ नही एक फटी घागरी को बगल में दबा के वह भी उन मावरियों केसांथ चली गई कहती है जैसा होगी देखी जायगी भावर

चली जाती है अब यहां मेरा कोई नहीं है परदेश जाते समय उसको आंसू आ जाते है कहती है अब मेरा मैत और ससुराल का देश मेरे से छूट रहा है मैंने पति का कहना नहीं माना तब मेरी यह दशा हुई दिवान सिह जी कहते है पति से विपरीत चलने से यह हाल होते हैं मां बहनों इस बात को समझ लो।

अब वह नौली वहां मजदूरी चाकरी करती है कुछ दिन किसी के डेरे में रही कुछ दिन किसी की मजदूरी की फर्नीचर की लकड़ी पत्थर बगैरा अब उससे उठाये नहीं जाते इसी प्रकार उसने अपना जीवन व्यतीत किया अन्तिम उसकी ऐसी बुरी दशा हो गई फिर वह पछताती है।

*

नौली लै द्वाहारा ढका लागी गेछा बटा।
स सांमई के निहांति, क्या पिसानू घटा॥
रुवरमा पिछोड़ी निछा नांङ्गी छा झांकरी।
कखराई मुण्डा दवै फाटिया घागरी॥
नसी गे झुपुली बाना भावर्यों दघड़ा।
डेरों डेरों मजा तब सारिछा लकड़ा।
मैता सौरासौ कौ म्यरौ छुटी गोछा देशा।
मालखा कौ कैं निमानौ हय परा देशा॥
कुछ दिना तका रैछा झौंजों का दगड़ा।
नि उठना त्यरा बुती दारा का लकड़ा॥
सुणी लियो दीदी बैंणी य म्यरौ सवाला।
पति की मगती छोड़ी यसा हनी हाला॥
दिवान सिह अर्जी कोंछा जोड़ी बेर हाता।
पढ़ि लियो यो किताब अकलै की वाता॥

पुरानी औरत

पुरानी घर वाली अब चचिया ससुर से कहती है—हे ससुर जी आप हमारे (पितृ) पिता तुल्य हैं। जो बात नहीं कहने की थी वह आपसे कहनी पड़ रही है यह कमजात बेशर्म औरत न जाने कहां से मिली इसने तो बिल्कुल ही इज्जत नहीं रक्खी हमें इधर-उधर लोगों में आना जाना उठना बैठना शर्म हो गई है। इस बखत (बण) बाहर गई है तब आपको बता रही हूं नहीं तो वह दुबककर सुनने को (घुवरे) छत की खिड़की में आ जाती है। कल उन्हें मारने को आ गई थी। मैंने हाथ पकड़ लिए फिर भी लो गों में खबर हो गई (बण घर) इधर उधर जहां जाओ उसी की चर्चा होती है इसने तो हद कर दी है पर ससुर जी मेरी भी यही बात है लेकिन अब मेरी समझ में आई कि हम दोनों ने अपने पति को बड़ा दुख दिया है हमको दुनिया में सुख कैसे मिलेगा हमने मालिक को बड़ा दुखी करा है दुनिया में पतिव्रताओं का धर्म क्या था अपने पति को ईश्वर के समान समझती थीं गोस्वामी ने रामायण में कहा है—

बृध रोग बस जड़ धन हीना।
अन्ध बधिर क्रोधी अति दीना॥
ऐसे हु पिय कर किय अपमाना।
नारि पाव यमपुर दुःख नाना॥
उत्तम के अस बस मन माहीं।
सपने हु आन पुरुष जग नाहीं॥
मध्यम पर पति देखहि कैसे।
भ्राता पिता पुत्र निज जैसे॥

बह अनुसूया जी ने सीता जी से कहा था दुनिया में कैसी २ नारियां हुई हैं सती सीता पार्वती द्रोपदी अहिल्या आदि जिनका नाम अब तक सूर्य और चांद की तरह चमक रहा है और जब तक धरती और आकाश रहेगा गंगा और जमना रहेंगी तब तक उनका नाम अमर रहेगा नारी को पतिव्रता होना चाहिये वह प्रिय प्रियतमा कहलाते हैं मनु आदि शास्त्रों की रीति है कि पति के साथ नारी की इज्जत है पति के ही साथ सुख है।

जब लग पति है तब लग पति है।
बिन पति विपति हजार ॥

पति के साथ जो नारी झगड़ा ही रखती है मेल नहीं रखती है प्रसन्न रहती है तो अन्त में कौन साथ देता है जब हाथ पैर थक जाते हैं बहू बेटे कोई भी उसकी इज्जत नहीं करते बुढ़िया फिर दूध में मक्खी की तरह दिखाई देने लग जाती है मालिक से जो स्त्री मेल करती है वह सती सीता की तरह सदा सुहागिन रहती हैं (स्यों चरेऊ) सुहाग चिन्ह समेत स्वर्ग को पति से पहले पहुंच जाती है जो बाद में मरती है वह रांड कहलाती हैं राम के पिता दशरथ जी ने कैसा हाल किया पर धन्य है कौशल्या को उसने कुछ भी नहीं किया मैंने भी पति की आज्ञा नहीं मानी और कोई इज्जत नही करी तभी तो मेरा फजीता हुआ अब मैं समझ गई और ज्ञान हो गया है कि कोई तीर्थ व देवता पति से बड़ा नहीं है मुझे अब पश्च्यातप है मैंने कितना बड़ा पाप किया मालिक से अलग हुई और मैं अन्दर रही मालिक बाहर रहे मैंने अब परलोक (बैकुण्ठ) जाने के रास्ते में कांटे बो दिये हैं पर ससुर जी मैं तो कह रही हूँ कि जो हुवा सो तो हो गया जो गलती हम दोनों की हुई उसको माफ कर दो सब साथ ही हो जावेंगे अपने अपने

करमों का भोग भोगना है मेरे पिता इसी प्रकार की शास्त्रों की बात बताया करते थे तब मुझे यह याद आई मैं पापों का पश्चाताप करती हूँ।

*

चचिया ससुर से

गीत—सुणौ सौरज्यु पितरा छा, निकणों को बाता।
कती बटी मिली पड़ो, निगुरी कुजाता॥
इनिलैंता बिलैंकुलै, निधरौ भरमा।
इथां उथां जांण हमू, हैगेछा सरमा॥
बणा धरा जथा जानू, इनिकी छा बाता।
वेहीया मारण ऐछा, मैंलै थामी हाता॥
ऐल बणा जाई नैछा, तबा कनू बाता।
द्वावा लागों होंणी ऐछा धुँवरम राता॥
हमुलै दियाछा आबा, पति कैणी दुख।
कसिक मिलौलौ हमू, वेलोकम सुख॥
आपणा मलिक कंणी, ईश्वरा ठारनी।
औरा मैंसा दुनियां का, मैबाब माननी॥
सति सीता पारवती, पतिव्रता नारी।
तब छ ऊनरौ नामा, दुनियां में भारी॥

नारी कखी हौखी चैंछा, पति सूं पिरीता ।
मनु वेदा शास्तरे की ययो छिया रीता ॥
वकै मरा सुख पाय, वकै मरा पैरा ।
क्यलैकी करौख हेय, वे दघड़ी बैरा ॥
जसौ मिलौ भागा पारी, दुखौ और सुख ।
जै राज धरम राज, मालखौ कौ मुख ॥
पति का लीजिया जबा, भटा जसा भुटा ।
को युछा निधान जबा थाकी गया खुटा ॥
पति है आधिना मरा, जैक भला दाना ।
नतरा है जैछा सैणी, मूलुकै की राना ॥
च्यला ब्वारी क्वे नीदिना मालखै है बाकी ।
बुढ़िया है जैछा तबा दै मजै की माखी ॥
रामा ज्यु का पिता ज्यु लै कसा कया हाला ।
धना छैं कौशिला हुणी' निदिया सवाला ॥
मैंलै लका के निमानी पति ज्यू की कयो ।
तब जैं फजीता म्यरौ, वे पापै लैं हयो ॥
आबा मैं समजी गोयु, जब आयौ ज्ञान ।
क्वे तीरथा बाकी निछा, मालखै समाना ।
मालखा जैं तला खना, मैजै मला खना ।
बैकुण्ठ का रस्त, बुती दिया कना ॥

पना फुको जसो हय, दगड़े है ओला।
करम को झुगुतुला एक रोटो खोला॥
म्यरा नौज्यू सुणाछिया, शास्तरै की वाता।
दिवानसिंह बिन्ती खनी, जोड़ी बेर हाता॥

चच्चिया ससुर

बहू चिरंजीव रहो तुझे धन्यवाद है। संसार सब स्वप्नों की माय हैं। तुमने तो पतिव्रत धर्म की वहौत बड़ी व्याख्या कर दी है। तू तो बिल्कुल ही अनपढ़ थी इतना बड़ा शास्त्रों का ज्ञान कहां से आया। वास्तव में जब संसारी जोवन को दुःख मिलता है और कष्ट आता है तभी समझ में आती है। बिना ज्ञान के भगवान की प्राप्ति नहीं होती किसी शायर ने ठींक ही कहा है।

इन्सान खुशरू होता है ठोकरें खाने के बाद।
हीना रंग लाती है पत्थर में घिस जाने के बाद॥

ससुर जी कहते हैं ईश्वर ने तो अपनी ओर से सभी जीवों को बराबर ही बनाया है अपने अपने कर्मो से ऊच और नीच होते रहते हैं जात छोटी बड़ी नहीं होती है। कर्मों के अनुसार जात बनती है। बड़ी जाति वाले लोग बड़े बड़े घरों वाले होते हैं। बड़े खानदान वाले लोगों के कर्म तो गिर जाते हैं लेकिन बड़े बने रहते हैं जैसे बड़ी जाति वाले ब्राह्मणों के नियम धर्म कर्म तो गिर गए हैं सन्ध्या पूजा-पाठ करते नहीं वेद शास्त्रों को नहीं जानते लेकिन बड़ी जात कहलाते हैं। मन में सत्यता दया तथा परोपकार की भावनाएं हों तब भगवान की प्राप्ति होती है। जो बड़ा होता है उसको इस प्रकार का ज्ञान होता है।

चचिया ससुर बहू से

जोरहये मेरी ब्वारी अमरै की काया ॥
जां तका देखनु सबा सपनै की माया ॥
त्वीलै ता समझै दिया पति कौ घरमा ।
नरग सरगा दिनी आपणां करमा ॥
तुता छिये बिलकुलैं, मुरख अज्ञाना ।
कती बटी पाय बाबु शास्तरों कौ ज्ञाना ॥
जीव कणी दुख आयो तबा आंछा ज्ञाना ।
बिना ज्ञानै निमिलना शीरी भगवान ॥
ईश्वरै तरफा बटी सबैं जीबा ऐका ।
कम ठुला समजनी मुरखौं की टेका ॥
ठुलौ छोटौ क्वे निहांती बुद्धि ठुलि हैंछा ।
आपणा मनमा सबा समझणौ चैंछा ॥
खान दाना बड़ा कैंनी वड़ों में शुमारा ।
करमा विगड़ी गौयो पै कनी गंवारा ॥
कैं बेरा करम हनी पड़ी बेरा ज्ञाना ।
दया कै धरमा हुँचा शास्तरों कौ ज्ञाना ॥
शरीरमा दुणों चैंछा ईश्वर कौ ज्यरौ ।
वी की ओर सुध न्याय तब और पयरौ ॥

*

सारांस

परसों यहां पन्डित जी आए वे बड़ी अच्छी ज्ञान की बातें सुनाकर गए वे मैंने उनसे कहा महाराज आपके चरणों की वन्दना करता हूँ आप हमारे लिए ईश्वर के समान हैं इस रास्ते में इधर उधर आवो तो दो मिनट बैठकर चाय पानी तम्बाकू पीकर जाया करो और गुरू महाराज हम तो सब मूर्ख हैं कुछ ज्ञान चर्चा सुना जाया करो। हमको मत छोड़ना महाराज साधु ब्राह्मणों के तो मुख ही भगवान होते हैं जो इनकी सेवा करता है उसके दुःख दरिद्र दूर हो जाते है सुख-सम्पदा सभी मिल जाती है हिंसा पर निन्दा का त्याग इनके दिल में रहता है तब से मैंने एक सत्संग की बैठक बनाई है कभी कोई ज्ञानी लोग आते हैं कभी कोई साधु लोग आजाते हैं रोज सतसंग होता है तबसे मैंने सुख पाया है। कुछ दिन बाद फिर सन्तान पैदा हो गई। सन्तान का सुख देखा। तब स्व० दीवान सिंह जी कहते हैं मैं तो मूर्ख हूं मुझे कुछ ज्ञान नहीं जैसा कुछ मुझे ज्ञान था वैसा लिख दिया। अब उस दो शादी वाले ने गोठ वाली की तरफ पलटकर देखा भी नहीं। पुरानी घरवाली से मेल कर लिया। उस नौली के जो हाल हुए वह पहले ही लिख चुके हैं। बाद में ठोकरें खाकर भाबर में घूम घामकर वह भी लाचार होकर घर आ गई फिर वह दोनों औरतें एक ही साथ रहने लगी। सब को समझ आ गई सब एक हो गये सुख सम्पदा आ गई। दीवान सिंह जी कहते हैं सोच समझ कर काम नहीं करने से दुख ही होता है। आदमी को दूसरी शादी नहीं करनी चाहिए अगर कर ली है तो कन्ट्रोल रखना चाहिए। अपने कर्तव्य को निभाना चाहिये।

*

ससुर जी

पंडिता ज्यू नसी गई बतै गई ज्ञाना ।
वैत्तागु ना पण्डिता ज्यु ईश्वरा समाना ।।
उना उभा जला जबा हमारा याँ आया ।
हमु छोड़ी और जगा कथैं भना जाया ।।
जोगी बामणों का रनी ईश्वरा मुखमा '
जो उनरी सेवा कनी उं रनी सुखमा ।।
एक जगा बणी दिया माधुक वैठाग ।।
पर निन्दा हिंसा कोऊं करि दीनी त्याग ।।
कैंदिना कवे ज्ञानो आया कैंदिना क्वे सन्त ।
राता दिना हनैं रैंनी भजन भगवन्त ।।
कुछ दिनों मजा देखौ च्यलौं कौ लैं मुख ।
जब चलौ सुमारगा, तब पाय सुख ।।
मैं दिवानी मूरखा छू ं नि धरूनों ध्यान ।
करमों का हात हय शास्त्रों को ज्ञाना ।।
जस मकैं ज्ञान छिया, वसै मैं गहाय ।
गोठै कि ओलिया लकि, भितेरै लिआय ।।

※ इति दिवानी विनोद पहला भाग समाप्त ※

कुमाऊनी साहित्य मुद्रक द्वारा तिलक प्रिंटिग प्रेस दिल्ली में मुद्रित

दीवानी विनोद

[दूसरा भाग]

असजुई मैणी (आलसी औरत)

कुमाऊँनी कविता में

लेखक :

ठा० दीवानसिंह स्योंत्री बिष्ट

अवैतनिक सम्पादक :—नरसिंह हीत बिष्ट

सहायक सम्पादक व संशोधक :

चिन्तामणि पालीवाल

सर्वाधिकार नरसिंह हीत बिष्ट जी के आधीन

प्रकाशन विभाग :

कुमाऊँनी साहित्य मण्डल

चौरासी घन्टा बाजार सीताराम, दिल्ली-६

प्रथम संस्करण जून १९७५ २००० प्रतियां

दीवानी विनोद दूसरा भाग

असङ्गई सैणि (आलसी औरत)

मैखि असङ्गई मैंस बातूनी ।
नन छै सात छां बिना रुनो ॥

सारांस

प्रस्तुत दीवानी विनोद दूसरे भाग में बताया गया है कि आलसी औरत के घर में क्या हाल होता है औरत आलसी है बच्चे सालाना के एक हो जाते हैं उनका पालन पोषण कुछ ठीक ढंग से होता नहीं न खेती का काम ठीक होता है बच्चे दूध की जगह छाछ के लिए तरसते हैं। घर वाली बच्चों पर चिल्लाती रहती है और कहती है। बाप का सिर खावो जो घर में मैंस गाय कुछ नहीं जोड़ता है। मैं क्या करूं गांव में सबकी लैणी मैंस हैं इनके बच्चे उनके घर छांछ मांगने जाते हैं उनको छाछ भी नहीं मिलती और खाली बर्तन लिए घर आ जाते हैं ऐसी हालत उसकी है।

औरत के समाचार

मैखि हैगे असङ्गई, और मुखा जोरा ।
मालरवा ज्यू पड़ी रई, राता दिना शोरा ॥
निधुनी मुनई कमैं निधुनी लुकुड़ी ।
काम काजा हरैं गोछा, ननूं की धुपुड़ी ॥
सात नना मुखां पांरा, आठूं पेट पना ।
गोरू मैंसा के निहांती, कसी जानूं छंना ॥

मर्द के बयान

कांलै ल्यानूं लता लूखा बिती गो तमाकू ।
द्वि तीन मेंहैना बटि, चलिरौ धमाकू ॥

सारांश

अब वह आदमी कहता है कहाँ से इन बच्चों के लिए खाना कपड़े लाऊ खेती के यह हाल हो गये हैं तेरी करतूत खेजो से ही देखी गई हैं। सीमार की की गैर जहाँ धान होते थे अब वहां खाली घास जमी है (नौहौवा) बाबरी के नीचे वाले खेत में कितने गढ़ेरी पिनाऊ होते थे अब वहाँ हिसाऊ के काँटे जम रहे हैं हल्दी मिर्च धानों के खेत अब बन्जर पड़े है घर वाली से कहता है तूने मेरे सारे घर को बर्बाद कर दिया है तमाकू भी पीने को नहीं है धमाकू चल रहा है।

पद्यावली

हलदा मरचा बटी, देखि गोछा भागा।
मेरी कमै पारा आबा, क्यलै लागौ आगा॥
द्वि तीना में हैंना वटी, तुनिलेई पाणी।
खेती बटी देखी गेछा, तेरी किरासांणी॥
सिमारै की गैरा छिया, धानों की हणियां।
सारै गौंका ननाआब, टिपनी पाणियां॥
कतुका गढेरी हंची, नौका तला पना।
आब लागी गई ओती, हिसाऊ का कना॥
कांफलै की गैरा पना, सारै गोंका गोरू।
मला पना जामी रई, नमडुवा तोरू॥
सौणौ कौ मेंहैंना लैगौ, भरी गेछा सारा।
लैण भैंसा हया जैका, दूदै की बौछारा॥
द्वि सैणियां ददा का छै, कस हैरौ कामा।
खोईमा तमाकू खानी, हैरोछा ऐरामा॥

बौरव

अब वह घरवाली कहती है रात दिन तेरी (करोली) सिक २ से मैं तंग आ गई हूँ क्या मेरी तकदीर बिगड़ी जो मैं तेरे घर में ब्याही गई। मेरी मंगनी करने को जैत सिंह सेठ आया था मेरे पिता जी ने वहां नहीं दी तेरे जैसा दरिद्री के घर दिया उनका बुरा हो जाय और बुरा हो जाय उस ब्राह्मण का जिसने मेरी जन्म-पत्री तेरे साथ जुड़ाई। परसों जो यहां गुस्याणा (जोगन) आई थी वह मेरी छोटी बहिन थी उसने अच्छा किया गृहस्थी त्याग कर जोगन बन गई वह आराम से खाती है भगवान का भजन करती है एक पिड़ाई धान उसके इसी गांव में हुए हैं जो वह कुली के सिर में ले गई तेरे घर में गाय न भैंस बच्चे दूध बिना तरसते हैं मैं क्या करू।

*

क्या विगाड़ौ भागा म्यरौ, जो मैं त्यरा आयो।
उरणां बछाणां तेरी, करोली लै खायो॥
जैतसिंह सेठ आयो, म्यरौ मांगणिया।
बुरो हैजो मांबुओं कौ, जों बीका निदिया॥
बामणों कौ बुरौ हैजो, जैलै में जूड़ायो।
फुटिया करमा म्यरौ, छरुवा का आयो॥
जो पोहू गुस्यांणी ऐछी, मेरी छिया भुली।
एका पिड़ै धान हुई, धरिया छा कुली॥
तीना चार घर गेछी, निआयो ऐरामा।
गृरहस्ती कै त्यागी वेर भलौ कौछा कामा॥
मासा का वेडुवा खेंछा, मसुरै की दाला।
भांम चांम किछी निछा, म्यरै वेरा लाला॥

मैलै त्यरा घरा कमै भुटिया निखाय ।
अपणों मनकी मैलै, कपड़ा निपाय ।
ननूं कौ फजितौं हैगो, छांका लिमातरा ।
सारे गो फेरनी जबा, तबा आनी घरा ॥
आठ सेरा छां पी दीनी, दूधा का समाना ।
क्यल का जनमा तुमू, बिगड़िया दाना ॥

घरवाली के झगड़े से तंग आकर अब वह एक लैणी भैंस ले आया है तब वह असगई औरत घास के लिए जाती है ऐसा घास लायी कि भैंस ने घास पर मुंह भी नहीं लगा दिया । घासों में वह रद्दी घास लाई बिरउवा चुनोड़ो ।

फिर गई तो बेडू के पत्ते ले आई अब सांझ को दूध दुहने गयी तो भैंस ने हाथ नही लगाने दिया फिर झगड़ा हुआ अब वह कहता है कोई व्यापारी भी नहीं आ रहा है अब मैं इसको बेच देता हूँ व्यापारी आया तो उसने कहा तुम थोरी (भैंस की पहिया) ले लो मुझे भैंस दे दो बाकी रूपये ले लो वैसा ही किया क्योंकि भैंस तो दूध देती ही नहीं थी । अब

मर्द

लैणी भैंसी खोजि ल्यानूं, ज्य लागनी दामा ।
तबा ते मालूम हलौ, यस हुंचा कामा ॥
नना तीना बोती जैला, ब्याजा लै उठौला ।
जनौरौ पेहैणों खाचा, तां लैका पुजालौ ॥
थोरि हली सैती, ल्यूला अधा हैं बेचुला ।
जो निल्यया भैंसी [illegible]

तब न्याय लैवी भैंसी, भैंस को बाखी को।
अमेमाना आई रौछा, छवयो को पांखी को ॥
असझई घास नैगे, घा लेछा चुनौड़ो।
हतौड़िया भैसी हई, नि ड़ोबौ धुनौड़ो ॥
फिर दौड़ी सारी हुना, काटी लेगे बेड़ु।
मतखियां भैंसी न्याय, आवा कथा खेड़ु ॥
न्यावा ग्वठा नैहै गेई, हाता परा तौलो।
पुठमा बदका मारी, हेरा भैंसी मौली ॥
भैंसी लै फटक मारी, दूर खेड़ी तौली।
मेरी क्यलै हैडा आजा, निरा मैं की बौली ॥
सात नना खुशो है ं दूध प्यूला कनी।
आपणों आपणौ सब मानौ हत्ये लीनी ॥
कैका हता मटपाई कै कहता ब्यला ॥
कैका हता डयाडू हलौ कैहांती तसला।
आगेछा भितेरा तवा, तौली फोड़ी बेरा ॥
नना तिना सबू हूंणो, बनी रैछा शेरा।
बाबू का हड़िका खाबो, तुम्ह नना तिना ॥
बिणड़िया भैंसी न्याय, क्या आय अदीना।
म्यरा ता गुणियां छिया, ह्य भैंसी का हाला ॥
भैंस को परखी हयो, उथैं लिगो काला।

थूक लगै कमाछियो, सब खेड़ी आय ॥
बेही ब्यावा पठयाछियो, आज खोजि ल्याय ।
ऐगोय बाखई बटी, जमनू कौ वावा ॥
त्वी लै क्यलै मचैं रौछा, ननू होंणी खावा ।
जैकैंणी बेचछा आवा, नौ शेरिया भैंसी ॥
तुमुलै कैदिया मेरी, सबू मजी हँसी ।
मालखाज्यू रीष चड़ि, करुछा सराद ॥
त्वीलैकरी दिया म्यरौ, सब बरबाद ।

सारांश

थोरी को भी बदलकर बकरी ले आया बच्चों को दूसरों के घरों से छाय माँगना नहीं छूटा अब वह कहता है मेरा कैसा करोबार था अब क्या हो गया तेरे आने के बाद घर के ये हाल हो गये है साल के साल इसी खेती का अन्न पूरा हो जाता था और नौ दस रुपये का अनाज बेचता था वैसे ही घी भी बेचता था वैसे ही घास बेचता हल्दी मिर्च बेचता था तब बर्तन भांडे, जेवर आदि जोड़े दस आदमियों में मेरा नाम था आने जाने वाले भी मेरे यहाँ बहुत थे मेरी इज्जत थी मेरी पहली घरवाली लक्ष्मी के समान थी उसके मरने के बाद मेरा सब कारोबार बिगड़ गया तेरे आने के बाद मेरी घटोतरी ही रही क्योंकि तेरा मन काम धन्धे पर नहीं लगता जो सलाह देता हूं मानती ही नहीं ।

बढ़िया घास

मलसौ बुक्यार ल्यानी, निसोंणों क्य छियो ॥
तैलौकौ चुनौड़ौ त्वीलै, दिन भरी दियो ।
ननू कैंणी छोड़ी घुला, चाहे रली भैंसी ॥
त्वीलै मेरी स्वरौं मजा, करि [illegible]

औरत

यो मैहना मजा जाखों, मैले ग्वठा पना ॥
मेरी तऊ बटो लैजें, त्यरा ङुङी कना ।

मर्द

छै सेरिया भैंसी छिया, सेर मजा आयो ॥
कैकंखी बेचून् आवा, ब्योंपारी नि आयो ।
ब्योंपारी ए बेरा कौंछा, ब्योंपारा लगौंला ॥
उसरी ली लियो तुमु, भैंसी मैं लिजौंला ।
द्व बरसी थोरी मेरी, उभा हणी चीजा ॥
तुमरी भैंसी की आवा, के ऊमेद निछा ।
भैंसो संटा थोरी ल्याय, थोरी की बाकरी ॥
छां मांड्खां नि टुटौंनौं, कसी कसी करी ।
निमखणी ग्वठा नैंगे, छिया नंना ह्या ॥
सारे गौंमें फेरी बेरा, ग्यो क थैं निपया ।
चारा नाई पोरा काछें, पराड़ का सांता ॥
कती लै उधार ल्यान् , शरमें की बाता ।
मालखा रीष मा आयो, करुछा सारदा ॥
त्वीलै करी दिया म्यगै, मव बरो बादा ।
तुवा तुई पुरी जाछी, ए खेती कौ आना ॥
नौ दशौं कौ बेचृ छिया, तवा ज्वड़ा भना

भखियां अखियां लकी, कतुका भछिया ॥
दशा जगों मजाम्यरी, भलौ नाम छिया ।
आधिनें की सैंणी छिया, लच्मी समाना ॥
ऊनीका मरिया बटी, बिगड़ि गी दाना ।
त्यकणि ल्याइया वटि उना है पुनई ॥
कस म्यरौ देखी छिया, मन रहौ जई ॥
सैणी का हतैलै हौछा गृहस्थी कौ कार ।
भलि सौणी मिली गेता उतारी छा पार ॥
सु लछिणी सैंण हैता घर बनि जांछा ।
गोरू भैंस जीवर लै भानौ जुड़ि जांछ ॥

नारी पुरुष जिसका एक दिल एक मन होता है तब सुख होता है अच्छी नारी सबको नहीं मिलती, नारी कोई तो देवी दुर्गा कोई लक्ष्मी गौरा पार्वती होती है और कोई राक्षसीय होती है कोई भूतनी कोई पिशाचनी डाकीनी साकिनी होती है है भाग्यों के अनुसार जिसकी जैंसी नारी मिल जाती है वैंसा ही भोगना पड़ता है ।

दीवानसिंह जी कहते है कि माताओं बहनों पतिव्रत धर्म को नहीं छोड़ना और पुरुषों से भी अर्ज करते है भाग्य में जैंसी नारी मिल जाती है उसके साथ इज्जत से निभाना चाहिए ।

नारी पुरूषौ कौ जैकौ, एकमन हयो ।
वैकुण्ठौ कौ सुख तब एति मिलि गोयो ॥
मरी बेरा दुनियां में, फिरी क्वे नि आय ।
भाग्यशाली पुरुषौं लै, आरामैं लै खाय ॥
नारीका सतैलै हूँचा, वैकुण्ठ कौ धामा ।
नारी का हातै लै [illegible]

नारो हाती देवी कनी, नारीहां मसाखी ।
क्वे नारी लक्ष्मी हैछा, क्वे हैछा मशाखी ॥
जको जसो नाम हलौ, बसै ज्वड़ो पायो ।
मसांखी पै बेरा बाबू, केले सुख पायो ॥
न छोड़िया दीदी भूली, पति की भगति ।
जैसी उच्चो नाम हलो, वसी कयामती ॥
नारीयो को दुनियां में नाम धरि जया ।
दिवानसिंह संसार, सपने की माया ॥

दीवान सिंह जी का अन्तिम वृतान्त

नरसिंह हीत बिष्ट द्वारा

दिवानी ज्यू कुन्हीला का, वड़े भला मैंसा ।
करि गया दुनियां में, सब सुख ऐसा ॥
उनूं कणी शौक छिया, गाणो बजाणों को ।
रामलीला कर छिया, पाठ रावणों को ॥
झोड़ा लकी भगनौला, गीद लें जागेरा ।
कविता लै करीछिया, तुक मिलै बेरा ॥
रामायण गीता का, उं बडे छिया गुणी ।
ईश्वरै की माया हरो, अबा लियो सुणी ॥
एक दिन उनरो छी, कसो कारोबारा ।
द्वी सैणीयां च्यलो चेलि भलो परवारा ॥
उनरी सामणी सब खतम है गया ।
दिवानी ज्यू आंखरी, में यकलै रैगया ॥

उनुकै फिकरा निछी बड़ौ छिया ज्ञाना।
बावन सनम हय, देहा अवसाना॥
गुणी ज्ञानी खुश दिल, बड़े छी रसीला।
सुणी लिया बात आवा, क्य हय आघीला॥
भितेरा का मना कुना, सब बांटी गया।
चेली बेटी सबू कणी, दान करी गया॥
खणियां पणियों कणी, दिगया जैजाता।
मरनी बखत मली, करी गया बाता॥
यसौ कय खावो पिओ, तुम, म्यारा भाई।
भली करी दिया मेरी, आखरी विदाई॥
मनुष्यका जत हनी, किरिया करमा।
अंखिरी संस्कार छयो, शास्तरा धरमा॥
आपणा हतैलैं सब, आफी करी गया।
मानिला स्कूलै हणी, सौ रुपें दी गया॥
गों मजिका बिरादरा, भला मेंसा हया।
रीतै की लै तीथ करी, जौस ऊँ कै गया।
नवै धवै तेल लगैं, सब परकारा।
वनाछ उनरौ फिर, सुन्दर शृंगारा॥
रेशमियां चपकोंनों, रेशमियां टांकी।
सजाय विमान तब, निकालोगे झांकी॥
मस्तक चनणां लाय, आंखूं में सुरमा।
उनौरौ संदेश गोय, बैकुण्ठा पूरमा॥

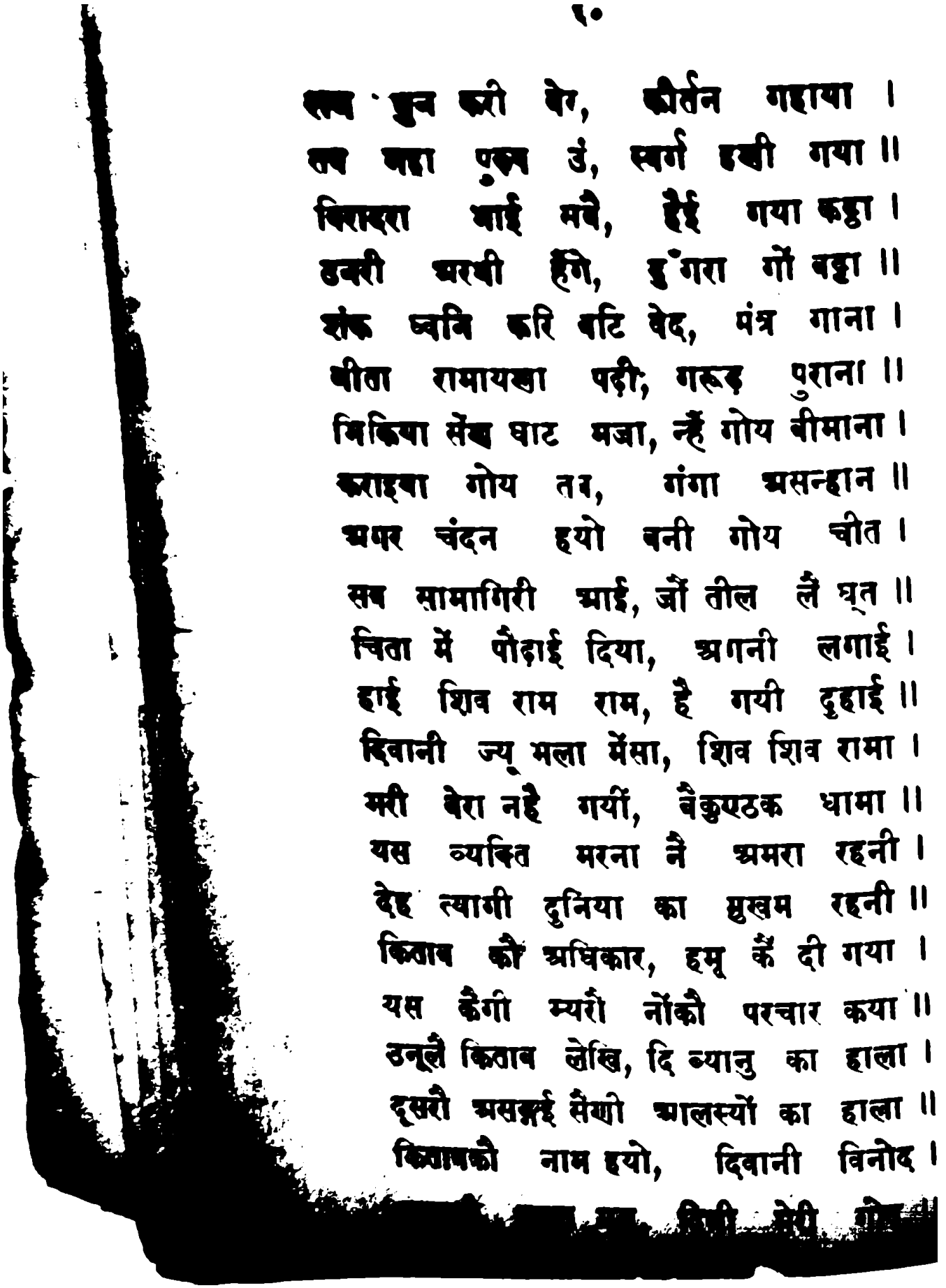

सब सुन करी बेर, कीर्तन गहाया ।
तब कहा पुरुष उं, स्वर्ग हबी गया ॥
बिरादरा आई मबे, हैई गया कट्ठा ।
उकरी अरथी हैगे, डुंगरा गौं बट्ठा ॥
शंख ध्वनि करि बटि वेद, मंत्र गाना ।
गीता रामायण पढ़ी, गरूड़ पुराना ॥
सिकिया सैंब घाट मजा, न्हैं गोय बीमाना ।
कराइबा गोय तब, गंगा असनान्हान ॥
अगर चंदन हयो बनी गोय चीत ।
सब सामागिरी आई, जौं तील लै घृत ॥
चिता में पौढ़ाई दिया, अगनी लगाई ।
हाई शिव राम राम, है गयी दुहाई ॥
दिवानी ज्यू भला मैंसा, शिव शिव रामा ।
मरी बेरा नहै गयीं, बैकुण्ठक धामा ॥
यस व्यक्ति मरना नै अमरा रहनी ।
देह त्यागी दुनिया का मुखम रहनी ॥
किताब को अधिकार, हमू कैं दी गया ।
यस कैगी म्यरौ नौकौ परचार कया ॥
उनूलै किताब लेखि, दि ब्यानु का हाला ।
दूसरौ असक्काई सैंणी आलस्यों का हाला ॥
किताबको नाम हयो, दिवानी विनोद ।
[illegible]

हमु हांती कय तब, किताब छपावौ ।
मेरी संतान छा यौ, तुम सेतौ पावौ ॥
हाथौ हाथ दिन्ली हुणी, मेज दी किताब ।
दिल मजी खुशी हैगे, छपी जाली आवा ॥
किताब छपण मजा, जब हैगे देग ।
पैं उनूलै चिठी लेखि, भौत रिषै बेरा ॥
यस कयो सुणी लियो, धरी बटी ध्याना ।
बिना निरै नदी निछा, जोगी बिना ज्ञाना ॥
ज्ञान बिना पंडिता नै, न्याय बिना राजा ।
एसै तुम दिन्ली वाला, क्या करला काजा ॥
किताब कै कय छपला तुम चीड़ी मार ।
तुमरा कें के निहोंनों, तुमू छा लवार ॥
तुमूलै चिंघार मारी, बनी बेर शेर ।
स्यावा जसा भाजी गया, दुमु दबै बेर ॥
खुशी रै तुसरी अवा, ज्य करंछा करौ ।
तुमू कणी सोंपि हैछा, जां धरछा धरौ ॥
जो उनुलै चिठी भेजी, लेखि है पछिन ।
उं स्वरग सिधारी गीं, रै हैगी बचन ॥
पढ़िया लिखिया सब, दिल लेगैं लिया ।
अमर आत्मा कैंणी, श्रद्धांजली दिया ॥
यतुक लेखुनूं अवा, जगा हैगे कम ।
कतु बात रैई गई, मनक मनम ॥

जसो हलो टेढ़ बाड़, माफ करी दिया ।
किताबे को बाद कसी, रोज़ करी लिया ॥
सुणो तुम सब भाव, एक मेरी बात ।
ऐसी मैं किताब लेखि, गराम पंचात ॥
नरसिंह नाम म्यरो, नरपति कनी ।
जैकी मना जैसी ऐछा - बसे कई दिनो ॥
पटी मेरी पल्ला नया, डुंगरा गराम ।
जमिन दफ्तर मजा, दिल्ली कोनूं काम ॥
चिन्तामणी किताब म यसै लेखिदिया ।
साहित्य मन्डल वटि तुम छापा दिया ॥

दीवानी विनोद तीन किताबें हैं

१. पहला भाग दो ब्यानों का हाल
२. दूसरा भाग असगई सैणी
३. पूरा दोनों भाग दीवानी विनोद

कुमाऊँनी साहित्य मंडल दिल्ली

कुमाऊँनी साहित्य मण्डल की स्थापना आज से १५ वर्ष पहले १९६० में हुई थी। अब तक मण्डल में करीबन २०-२१ किताबें कुमाऊँनी भाषा में प्रकाशित की है प्रस्तुत दिवानी विनोद मण्डल का तीसरा प्रकाशन है और वह भी तीसरा सशोधित संस्करण है प्रस्तुत प्रस्तुत संस्करण साहित्य मण्डल के कार्यकर्ताओं की राय से तथा सम्पादक की सहायता से सशोधक ने एक नये ढंग से २ भागों में बांटा है पहले भाग में दो सौतों का हाल तथा दूसरे भाग में (असङई सैणी) आलसी औरत के हाल है संशोधक व सम्पादक ने उन सभी कुमाऊँनी पदों का सांराश भी पहले हिन्दी में दे दिया है और पद्यावली में उनका अन्तिम वृतान्त जीवन-चरित्र सव यात्रा दांह सत्कार भी उन्हीं की शैली में दिया गया है।

आगे मण्डल ने इस नारी वर्ष में नारी नव निर्माण शक्ति सृष्टिकर्ता शीर्षक से आदि नारी सतरूपा से लेकर आधुनिक वर्तमान नारी ईन्द्रागांधी तक का वृतान्त समेत पर्वतीय नारियों की उत्तरोत्तर जाग-रूकता व शिक्षा सभ्यता तथा पवित्रता प्रतिष्ठा के विषय प्रस्तुत कर रहा है।

कुमाऊँनी साहित्य मण्डल आगे को नये कुमाऊँनी कवि लेखकों की रचनाओं को राष्ट्र भाषा हिन्दी के सहायतार्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न कर रहा है जो कि हिन्दी को बल दे सकते है धनाभाव के के कारण कुमाऊँनी रचनाओं के कई फूल अविकशित व अर्ध विकाशित पड़ें है यदि राष्ट भाषा के प्रचारार्थ इस अर्धविकसित पंखड़ीयों को विकास में लाने के लिए हमारी सरकार सरकारी सस्थाओं से धन का सहयोग दिला सके तो राष्ट्र भाषा हिन् की सहायक (उपभाषा) कुमाऊँनी का विकास हो सकता है।

—: अ० अध्यक्ष :—

त्रिलोक चन्द जोशी

विशेष सूचना

नकली से सावधान

दिवानी विनोद कई प्रकार के नकली छपे हुए बाजार में चल रहे हैं आप लोग असली दिवानी विनोद नरसिंह होत विष्ट द्वारा सम्पादित कुमाऊँनी साहित्य मन्डल द्वारा प्रकाशित दिवान सिंह जी का अन्तिम वृतान्त आदि और स्वर्गीय दिवानसिंह जी का नाम प्रकरण के अन्तिम लाइनों में दिया हुआ है जैसे:—

१. दिवानसिंह विनती कनी जोड़ बेर हाथ !

२. मैं दिवानी मुरखा छौ निधरनी ध्यान !

इन लाइनो को देखकर असली दिवानी विनोद दो भ्यानों के हाला पहला भाग और असङ्ई सैणी दूसरा भाग देख कर लें। नकल करने वालों ने उसका नाम भी बदल कर उपदेशिक पत्रिका पहाड़ी भाषा में गीत कररखा है और मैटर ज्यों का त्यों दिवानसिंह जी का है बल्कि और घटा दिया है और लाइनों में लेखक का नाम भी छोड़ दिया है। इतना ही नहीं किन्हीं केशवदत्त पाडेंय एम. ए. सा. रत्न जीने तो उसको अपना ही लिखा बता दिया है कितना अनुचित व अवैधानिक कार्य है प्रकाशक ने तो इतनी बड़ी गलती की है जितना कि किसी के लिखे को अपने नाम पर कर देना है किसी की संतान को अपनी बता देने से वह अपनी नहीं हो सकती है जैसे किसी के बाप को बाप बना है ऐसा ही किसी की रचना को अपनी बनाना है ऐसे काम करने वालों पर कानूनी कार्यवाही की जा सकती है आइन्दावे लोग ऐसा अनुचित कार्य न करें।

प्रकाशन विभाग :

कुमाऊनी साहित्य मण्डल

दिल्ली

कुमाऊनी साहित्य मुद्रक द्वारा तिलक प्रिन्टिग प्रेस दिल्ली में मुद्रित